



सर्व प्रथम अद्वितीय भाषा



। १०८ मुनि क्षीरसागर जी महाराज प्रणीत

आगमवाणी

प्रथम भाग



प्रकाशक

बाबूलाल लम्बरदार

मा. फ. योगचन्द्र प्रजलाल चौक बाघार, भोपाल.

विषय-सूची

नाम पाठ	
१ सत् अधिकार	
२ सख्याधिकार	
३ क्षेत्राधिकार	
४ स्पर्शनाधिकार	
५ कालाधिकार	
६ अंतराधिकार	
७ भाषाधिकार	
८ ज्ञानप्रदुःखाधिकार	

शुद्धि पत्र

==

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
६१	९	नाना जीवा वी	एक और नाना जीवों :
६५	१०	प्रमत्त खयल	प्रमत्त और दममत्त





अनेक ग्रंथा क रत्ना और अनेक अतिशय
 स्वयंसेविता, परमअध्यात्मयोगी, विद्यमानभोगविहारी,
 दम्पतिमहाव्रतधारी, एकाविहारी, निनवरलिङ्गधारी,
 महामाहियिक, महावार्त्ता, महारवि] क
 धाम परमपूज्य श्री १०८ महामुनि
 श्रीरसागर्जजी महाराज।



श्री १०८ मुनि क्षीरसागर जी महाराज का जीवन-वृत्त

आपका जन्म थावण कृष्ण ३ सं १६६० में रिठौरा ग्राम जिला सुरेना (नेयर) म बरेया बंश में सौ० द्रौपदी बहिन क पंगन हुआ था। आपका नाम बोहरे मोलीलालजी था। पिता का नाम बोहरे पक्षोलालजी तथा माता नाम कौशलया बाई था। आपकी शिक्षा सुरेना जैन विद्यालय म केवल चौदी तक हुई और ११ वष की अवस्था में आपका विवाह साह नन्दरामजी [मवाजियर] की सुपुत्री मसुरा के साथ हो गया। लगभग ५० वष की या तक आप पूर धार्मिक मयादा सन्ति गृहस्थ जीवन करते रहे। आपका व्यवसाय कपड़े की दुकान तथा साहकारी था। चित्तरीलालजी, मुनेरीलालजी, ममलालजी, ज करलालजी तथा अमृतलालजी आपके पांच सुपुत्र हैं। जो इस कालियर में कपड का व्यवसाय कर रह हैं। विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते हैं। आपकी हृदय में विशेष धार्मिक अभिरुचि उत्पन्न हुई और स्वाध्याय, न, पूजन आदि आपके दैनिक नियम बन गये। बाल्य मात्र से ही आपकी प्रकृति व्यसनों से सदा विमुख रही। प्रत्येक शास्त्र की समाप्ती पर आप कुछ न कुछ म अध्यय लेते थे। एक बार आपने एक महान नियम लिया कि पुत्र बंधू क आते पर स्वाग दुगा। गृहस्थ जीवन यतीन क ले हुए भी आपका हृदय सदैव रासार भित्त रहा। सांसारिक प्रलोभन आपकी पवित्र आत्मा को जरा भी विचलित न सके। दा पुत्रों की शादी होने के पश्चात उनकी छोटी अवस्था होने के कारण न ३ वष तक ७ की प्रतिमा धारण कर पर पर ही रहे। अत में सांसार की मेल्यता को दल कर अपने आत्म कल्याण की दृष्टि से आपने अपनी धर्म पत्नी से कुछ मुद्रम अवस्था धारण की। इससे पूर आपने धर्म पत्नी सहित १ वष तक समी तीर्थों की यात्रा की। आपकी धर्म पत्नी पद्म श्री चन्द्रिका के नाम से प्रसिद्ध हैं। ३ वर्ष तक मुद्रक अवस्था में रहने के पश्चात सम्बत २००७ में मोपाल मन्त्र कल्याणक प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर तप कल्याणक के दिन विशाल समुदाय की हृष भवि के बीच आपने मुनि व्रत धारण किया। सांसारिक सुखों समन्त साधनों के होने हुए भी, पातकारक एवं आधिक्यटिसे सम्पन्न होते हुए,

उनका दुहरा कर आपने सामान काल में एक महान आदम उपस्थित किया है ।

अध्ययन की ओर आरम्भ से ही आपकी विशेष रुचि थी । विद्यालय छोड़ने के बाद भी आपन धार्मिक अध्ययन जारी रखा और समयसार प्रवचनद्वारा जेमे महान मंत्रों का अध्ययन किया । अध्यात्म वाणी जेमे महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना आपके इसी अध्ययन और मनन का परिणाम है । समय के साथ आप्यात्म विषय का ज्ञान आपकी एक महान विशेषता है । धार्मिक ए० आध्यात्मिक विषय का जपूर ज्ञान होन के साथ २ आपका स्वभाव भी अत्यन्त शांत वरम एवं मर्मर है । आपका जैली अत्यन्त मधुर ए० प्रभावशाली है । आपका व्यक्तित्व इकसा महान है कि दशन वरत है दृश्य में जपूर गति का अनुभव होन लगता है । इसमें पूर आपन लगभग २० २५ आध्यात्मिक एव महत्व पूर्ण ग्रन्थों की रचना की है जिसमें अनेक जटिल विषयों का निष्पत्ति किया है जो अभी तक प्रकाशित है ।

आप कभी भी अपने श्रोताओं को किसी वस्तु को ग्रहण करने का दुःख दान करने के लिये विवश नहीं करते । किन्तु आपका उपग इतना हृदयस्पर्शी होता है कि आलागन्ध स्वयमेव ही शक्ति अनुसार सब कृष्ण क्रिय विना नहीं रहते । आप लौकिक धार्मिक ए० सामाजिक सम्प्रदायों से तरका विमुक्त रहते हैं आपका अधिकतर समय अध्ययन और मनन में ही व्यतीत होता है । समाज का आप जत मुनिरान पर महान गव है ।

सितारराय लखमीचन्द जैन,
मेलसा



मूल्य जीवस्थानबोध

कारण निम्न लिखित दातार —

४००) प्रकाशक की ओर से ।

१०१) सेठ राजमल जी

मालिक फर्म — चुन्नीलाल दोलतराम भोपाल ।

१११) सेठ तुलाराम जी हजारीलाल जी भोपाल ।

१०१) सेठ मुरलीधरजी बापूलालजी जैमवाल जैन भोपाल ।

७०३) कुल जोड़



❀ जीवस्थानदर्पण में भूल ❀

प्रेस की शिथिलता से यह ग्रन्थ दो वर्ष में छप कर तैयार हो पाया । और असावधानी के कारण जीवस्थानदर्पण में नष्ट वेद व अपगत वेद छोड़ दिया है सो मूल ग्रन्थ से जानना चाहिये ज्ञानमार्गणा में मनपर्यय के साथ संयोग और अयोग का खाना बना दिया है । उसे काट कर ठीक कर लेना चाहिये ।

इतिनामकं च ॥

— गङ्गा तन्मित्रे लल्लो प्रभक

1000 111337 (000)

2. 25/10/2018

1. $\frac{1}{2} \log 2 = \frac{1}{2}$

Figure 1

45718 (E)

1 105 55 (5 5

ཕྱག་ཁྱེད་ཀྱི་ཁྱུང་ལྟོ་།

5000

१५ : (६०७)

57 77

$$r = \frac{1}{2} \quad (2)$$

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 अथ श्रीगणेशस्तोत्रम्
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 दशैकं नाम संप्रदायः
 श्रीगणेशाय नमः ॥

भूमिका

(चोर प्रमथ)

भाव कथन इस ग्रन्थ में, द्रव्य कथन नहीं लेश ।

शब्द श्रवण कर भ्रम गहरे, तिनके मति न विभेद ॥

इस ग्रन्थ का भी जिनेश किनने किया—श्रीमद्भरसेनाचार्य के शिष्य भी पुष्पदन्त और भूतबली ने । यह ग्रन्थ किस अनुयोग का विषय है ।

जिन मत में अनुयोग स्वर होते हैं—प्रथमानुयोग चरखानुयोग, करखानुयोग द्रव्यानुयोग । इनमें प्रमथ प्रत्येक का हेतु अद्वैत भाव रख कर व्यवहार जीव का ज्ञान और पारमार्थिक जीव का ज्ञान कराना है । आदि के दस अनुयोगों में द्रव्य का और अन्त के दो में भाव का कथन है । किन्तु करखानुयोग में द्रव्य का नाम लेकर विधान किया जाता है कि ये द्रव्य के भाव हैं जबकि द्रव्यानुयोग में उन भावों का निषेध किया जाता है कि ये द्रव्य के भाव नहीं हैं । उपर्युक्त अनुयोगों में से यह ग्रन्थ चरखानुयोग का विषय है ।

इस ग्रन्थ का विषय क्या है ? मागणा और गुरुस्थानों में स्थित जीवों की राख्या आदि का ज्ञान कराना ।

इससे लाभ क्या है ? इससे यह लाभ है कि जो अज्ञानी 'तो मैं मो में पड़ा सम्म में जाय रहो जग माहीं' इत्यादि जीवाजीव में भेद नहीं करते उनके बोधार्थ व्यवहार जीव के स्वरूप का निरूपण किया गया है । मागणा १४ होती है । इनमें द्रव्य (आचार) और भाव (आधेय) का भेद किया जावे तो जिस तरह भाव मागणा के १४ भेद होते हैं वही तरह द्रव्य मागणा के भी १४ भेद हो सकते हैं ।

जैसे मनुष्यादि शरीर को गति, स्पर्शनादि इन्द्रिय के चिह्न को इन्द्रिय, वस्त्र स्थावर जीवों के शरीर को काय, द्रव्य मन आदि को योग और स्त्री आदि के याज्ञ मिह का स्त्री आदि वेद इत्यादि द्रव्य मागणा ।

मनुष्यादि शरीर के उदय को गति, स्पर्शनादि के लघोपशम को इन्द्रिय, वस्त्र स्थावर कर्म के उदय को काय, मायमन आदि के लघोपशम को योग और स्त्री आदि के भाव को स्त्री आदि वेद इत्यादि भाव मागणा ।

इन द्रव्य और भाव मागणाओं में सभी जगह समानता है किन्तु वेद मागणा में असमानता है जैसे स्त्री स्त्री में द्रव्य वेद तो समान ही होता है किन्तु भाव वेद किन्ता स्त्री के पुरुष वेद, स्त्री वेद, और नपुंसक वेद हो सकन ह इत्यादि । यदि द्रव्य के आधित्य बलन किया जाना तो प्रत्येक भाव वेद तीन प्रकार के द्रव्य वेद के आधित्य पाई जान वाला वेद भगणा का कथन तीन प्रकार के अनिर्दिष्ट ६ प्रकार का करना पड़ता और उसकी सख्यादि का विस्तार भी उसी तरह करना पड़ता इसलिये निम्नयोजन प्रत्येक का विस्तार होना । क्योंकि द्रव्य से स्वसार एव परमाद्य नहीं होता किन्तु भाव से होता है इसलिये भाव का कथन किया गया है ।

सुनामा तात्पर्य यह है—कि पाचवें गुणस्थान तक तीनों द्रव्य वेदों के आश्रित ३२ भाव वेद पाये जाते हैं लेकिन छठवें गुण स्थान से आत तक द्रव्य पुरुष के आधित्य हो तोना भाव वेद पाये जाते हैं ऐसा आशय स्वयं निकलता है पर यहा द्रव्य वेद की अपेक्षा नहीं की गई ।

प्रकाशक और प्रकाशन परिचय

श्री बाबूलालजी नन्धरदास (फम भोगचन्द्र ब्रजलाल) भोपाल श्री जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों में से हैं। आप प्रायः सत्संग के सभी विभूतियों से परिपूर्ण हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। आपकी धृष्ट माता गंगाबाई जी को धर्म में प्रगाढ़ प्रेम है। अचानक माताजी नेत्र विहीन हो गईं जिससे आप विशेष दुःखी हुये और नत्रचिकित्सा योग्य न होते हुये भी मातृ प्रेम से प्रेरित होकर ईश्वर चिकित्सा हेतु ले गये। चिकित्सा से निराश होकर यदुबानी आदि सिद्ध क्षेत्रों की यात्रा कराके घर लौटे। इसी बीच में अनेक अतिशय के धारी भी १०५ बुद्धक स्त्रीरसगार जी महाराज आध्यात्म वाली के प्रफ सशोचनाथ भोपाल पधारे। भापाल समाज पर महाराज क सुमधुर व सरल प्रवचन द्वारा अपूर्व प्रभाव पड़ा यहा तक कि भगवान भी नमिनाथ स्वामी का विशाल मंदिर जो दो साल से बगैर प्रतिष्ठा के था उसका पंच करवाणन प्रतिष्ठा हुई उसी अवसर तप करवा एक क समय विशाल जन समुदाय का हर्ष ध्वनि क बाध उपरत बुलक श्री महाराज न मुनिमत धारण किया। इस घटना से प्रेरित होकर जैन समाज न भोपाल में ही चतुर्मास कराया व समाज न प्रवच हेतु एक समिति का निमाण किया। उस समिति के मंत्री भा बाबूलाल जी नियुक्त हुये।

एक समय जब महाराज भी धवल सिद्धांत में विवाद प्रस्त "स्वयं" शब्द का निर्णय कर रहे थे। उसे देख श्री बाबूलाल जी को अपनी माता जी के नत्र विद्वानता का याद आ गई। तब उन्होंने माता जी के दर्शनावरणी कर्म के क्षयापशमार्थ इस प्रवच का अपनी ओर से प्रकाशित कराया।

आप का ही सट परखा के फलस्वरूप आज हमें सरल, स्पष्ट और सक्षेप रूप में इस आगमवाणा अंतर रहस्य एवं महत्त्व पूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन करन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

सूरजमन जैन विशारद, भोपाल

शब्द-कोष

अभ्युत्थान—आवली में ऊपर और २ पक्षों से एक समय कम काल को कहते हैं ।

अतीत—१ भूत काल, २ बीना हुआ ।

अनागत—१ भविष्य काल २ आने वाला ।

अनादि असन्—१ आदि अन्त रहित २ ना कभी पूरा न हो ।

अनादि शान्त—अनादि होकर भी अन्त रहित ।

अनिन्द्रिय—१ इन्द्रिय रहित, २ ज्ञान ज्ञेयी ।

अनिष्टसिद्धय—१ समाप्त भाग, २ बादर कपाय के उदय की दृष्टि १ नीचे गुणस्थान का नाम ।

अनुभव—अनुभवार्थ कहित ।

अपयाप्त—१ अपूर्ण, २ शरीर कयात की पूर्णता से रहित ।

अपूषकरस्य—१ जो मात्र पहिले कभी न मख हा २ अनाथे, ३ विरिध ।

अधपुद्गल परिचयन—असख्यात कालवत् ।

अवसर्पिणी—१ अपसर्पिणी, २ निब काल में उत्तमाक्षर आयु आदिकी हानि होती नाथ ३ हास युत, ४ हानि युत ।

अवहार काल—१ अपहत काल, २ पूरा काल ।

असायत सम्यग्दृष्टि—१ देश समय मकल संयम से रहित सदाचारी, २ चतुष्टय गुणस्थानवर्गी ३ अग्रत सम्यग्दृष्टि ।

आयाम—सम्याइ काल के समय का प्रमाण ।

आवली—असख्यात समय वाली मज्जा ।

उत्तमपिपी—अपसर्पिणी से उत्तम अथ ।

उपयुक्त—ऊपर कल्लु हुआ ।

उपशान्त—१ इन्द्रिय निमग्न, निरुद्धी कयाय उपशम का प्राप्त हो चुकी है ।

कमणकाययोग—१ कम योग, २ सब शरीरों की उत्पत्ति का कारण ।

कोटाकोड़ाकोटो—करोड़ का बार करोड़ से गुणित संख्या ।

कोटाकोड़ाकाटाकोटो—करोड़ को तीन बार करोड़ से गुणित संख्या ।

गुणहानि—गुणारार रूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जावें ।

घन—लगभग, चौड़ाई और ऊंचाई में समान किसी मर्यादा को तीन बार परस्पर गुणित करने पर प्राप्त संख्या जैसे, $४ \times ४ \times ४ = ६४$ ।

जगप्रसर—जग भ्रंशों का सम ।

जगभ्रंशी—अष्टापत्य की अष्टच्छेद राशि के अष्टख्यातवें भाग भाग पनागुलों को रखकर स हैं परस्पर गुणित करने पर प्राप्त राशि ।

छेदोपस्थापना—पाशों का प्रायश्चित्त लेकर पुन मत्त धारण करने को छेदोपस्थापना कहते हैं ।

निवृत्त पर्याप्त—१ पूरा होने वाला, २ शरीर पर्याप्त पूर्ण होने वाला ।

पर्याप्त—१ पूरा, २ शरीर पर्याप्त की पूर्णता सहित ।

परिहार विशुद्धि—हिंसादिनिवृत्ति हिंसा रहित निमल प्रवृत्ति ।

पत्य—४५ अन्न प्रमाण संख्या का पत्य कहते हैं —

पत्यशत पृथक्त्व—तान को पत्तों से अधिक व नी को पत्तों से कम ।

पूर्वकोटि—गुरु को एक करोड़ से गुणा करने पर प्राप्त संख्या ।

पूर्व—८४ पूवाङ्ग का एक पूर्ण होता है ।

पूवाङ्ग—८४ लाख वर्ष बाल को पूवाङ्ग करते हैं ।

पूर्वकोटि पृथक्त्व—तीन पूर्ण कोटियों से अधिक नो पूर्वकोटियों से कम ।

प्रतिपक्ष—१ प्राप्त, २ स्थित

प्रतिभाग—१ भागक २ भागहार ।

मनुष्यनी—मान स्त्री ।

मार्गशा—१ जिनम जीवों को जाना जाय २ जिनस जान शोन जाय ।

मास पृथक्त्व—तीन मास से अधिक व नौ मास से कम ।

यथाशयात—मादनीय उपशम अवसा क्षय की अवस्था ।

योनिमती—वियेनाशी ।

रूपाधिक—एक अक्ष से अधिक ।

सन्ध—प्रात हुआ ।

लक्ष्यपयातक—१ अपयात, २ जिनका पयात पुण १ ही ।

लोक नासी—जम नाला ।

वग—समान मर्यादा का गुणन+ल ।

वगमू—निवक्षित सरया जिनके वग रूप हा तैस २४ का ८ ।

वप पृथक्त्व—तीन वप से अधिक व नौ वप से कम ।

विप्रह गति—रमव गति ।

विमग ज्ञानी—हुअपयि ।

विश्रम सूची—जाना तर्ग के बाव का विस्तार ।

शतपृथक्त्व—तीन शी से अधिक व नौ शी से कम ।

शलाकारूप—२४ प्रक १ का नाम, २, ५२ विशेष ।

सचित—इकठ ।

सयनासयन—१ कुछ समय कुछ अमयम २ मिभित, ३ दश विरति ।

सम्पग्मिध्यादृष्टि—१ मिभ २ समीचीन व मिषा भदान से मिभित ।

सागर—१० काड़ाकापी पक्ष्य हा १ सागर ।

सागरशत पृथक्त्व—तीन शी सागर से अधिक व नौ शी सागर से कम ।

सादिशात—आदि अ न सहित ।

साधिक—हुअ अधिक ।

सूयागुल—अद्रापल्य नी अधच्छे राशि प्रमाण पक्षों का रत्नकर प
स्वर गुणित करने पर प्राप्त सरया ।

सूत्रसाम्परायिक—केवल सूत्रम लाम का उदय ।

स्त्री-मुक्ति निषेध

इस भय परभय नहीं चहे जो धारे जिन धर्म ।
 फिर क्यों नारी लिंग को पृथक् बताया भम ॥१॥
 नारी चित्त में अधिक है, राग द्वेष भय म्लान ।
 मायाचार विचित्र है, इससे कम न ज्ञान ॥ ॥
 विषय भोग खजा अधिक चित्त त्रिगुण न गात ।
 होवे सहसा इन्हों के मासिक लोह पात ॥ ॥
 शिथिलाचरण स्वभावसे, शिथिला हैं बरान ।
 इस कारण तिर भाग में, पुरुषारत मत जान ॥३॥
 नारि ये नि कुच नाक में, कारण नामि के थन ।
 सूक्ष्म नर उत्पत्ति लखी, जिनपर कवल ज्ञान ॥४॥
 इन एकहु विन दोष के, इन नारि जग पूर ।
 ठका शरीर न मनुज सम, इससे बल जरूर ॥५॥
 कोई दान शुद्ध घर सूत्र पाठ युत होय ।
 घोरचरण आवरति यदि, तदपि न मुक्त होय ॥६॥
 इस कारणसे पृथक् है बल सहित तिय भेद ।
 योग्य चरण युत अजिका कुलवय रूप विशेष ॥७॥

टिप्पणी — इन दोहों का आशय द्रव्य स्त्री स है ।

पर्याप्तापर्याप्त दण

नाम रति	मिथ्या	मात्रादन	मिथ	अमन	सयमा मयम	मर सय
सामान्य नारका	पर्याप्ता पयाप्त	पयाप्त	पर्याप्त	पर्याप्ता पयाप्त	X	X
प्रथम पृष्ठी	"	"	"	"	X	X
द्वितीय पृष्ठी	"	"	"	पयाप्त	X	X
सामान्य तिर्यक	"	पयाप्ता पयाप्त	"	पयाप्ता पयाप्त	पयाप्त	X
सामान्य पञ्चद्वय निवृत्ति तिर्यक	"	"	"	"	"	X
शान्तमती	"	"	"	पयाप्त	"	X
सामान्य मनुष्य	"	"	"	पयाप्ता पयाप्त	"	पयाप्त
निवृत्ति पयाप्त मनुष्य	"	"	"	"	"	"
भाव मनुष्यणी	"	"	"	पयाप्त	"	"
सामान्य देव	"	"	"	पयाप्ता पयाप्त	X	X
मौलम से प्रवेष्ट तक	"	"	"	"	X	X
अनुदिश से अत तक	X	X	X	"	X	X
भयनक श्रीर नय देवा	पयाप्ता पयाप्त	पयाप्ता पयाप्त	पर्याप्त	पयाप्त	X	X



॥ श्री परमात्मने नमः ॥

श्री १०८ मुनि सारसागर्जी महाराज प्रणीत

आगमवार्त्ता.

प्रथम भाग.

मंगलाचरण और प्रथम परिचय

सो० नमि के वीर जिनेश, धवला का आधार ले ।
जीव धान उपदेश, भाषा मय श्रुत मे करूँ ॥

एमो अरिहताण, एमो सिद्धाण, एमो आढरियाण
एमो उवज्झायाण एमो लोए सब्बसाहण ॥१॥

जीवों के चौदह गुणस्थानों को जानने के लिये पढ़िने
मार्गणा स्थान जानना चाहिये ॥७॥ ये कौन हैं ॥३॥ गति,
इन्द्रिय, काय, योग, वद, कषाय, ज्ञान, समय, दर्शन, लेश्या,
भव्यत्व, सम्यक्त्व, मैत्री और आहार ये चौदह मार्गणा हैं ॥४॥

इन मार्गणाओं में चौदह गुण स्थान जानने के लिये आगे कहे गये आठ अधिकार समझना चाहिये ॥५॥ वे कौन हैं? ॥६॥ सत्, सख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्प बहुत्व ये आठ अधिकार हैं ॥७॥ सत् कथन, सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार का है ॥८॥ सामान्य स मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥९॥ सासादन सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ॥१०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥११॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ॥१२॥ सयतासयतजीव होते हैं ॥१३॥ प्रमत्त सयत जीव ज्ञान है ॥१४॥ प्रमत्त-सयत जीव होते हैं ॥१५॥ अपूर्वकरण चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१६॥ अनिष्टतिहरण चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१७॥ सूक्ष्म सापर-यिक चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१८॥ उपशान्त कषाय जीव होते हैं ॥१९॥ क्षीण-रूपाय जीव होते हैं ॥२०॥ सयोग केवली जीव ज्ञान है ॥२१॥ अयोगकेवली जीव होते हैं ॥२२॥ सिद्ध जीव होते हैं ॥२३॥

इति स्वामान्य गुणस्थान कथन

;

विशेष गतिमार्गणा की अपेक्षा नरकगति, तिर्यचगति, मनुष्य-गति देवगति और सिद्धगति होती है ॥२४॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुण स्थान तक नारकी होते हैं ॥२५॥ मिथ्या-दृष्टि से लेकर सयतासयत गुण स्थान तक तिर्यच होते हैं

॥२६॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक मनुष्य होते हैं ॥२७॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक देव होते हैं ॥२८॥ एकेन्द्रिय से लेकर असेनी पचेन्द्रिय तक केवल तिर्यंच होने हैं ॥२९॥ सेनी मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक चारोंगति वाले होते हैं ॥३०॥ सयतासयत गुणस्थान में तिर्यंच और मनुष्य होते हैं ॥३१॥ आगे केवल मनुष्य होते हैं ॥३२॥

इति गति मार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा की अपेक्षा एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, त्रन्द्रिय, चोइन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीव होते हैं ॥३३॥ एकेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं वादर और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३४॥ दोइन्द्रिय से लेकर चोइन्द्रिय तक के जीव पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३५॥ पचेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं सेनी और असेनी वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३६॥ एकेन्द्रिय से लेकर असेनी पचेन्द्रिय तक मिथ्यादृष्टि नामक प्रथम गुणस्थान में ही होते हैं ॥३७॥ इन असेनी पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोग केवली गुणस्थान तक पचेन्द्रिय जीव होते हैं ॥३८॥ उनसे पर मिद्ध हाते हैं ॥३९॥

इति इन्द्रिय मार्गणा

प्राय मार्गणा की अपेक्षा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्नि-कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिनायिक, असकायिक और काय

गदित जीव होते हैं ॥४०॥ पृथ्वीकायिक से लेकर वायुकायिक तक जीव दो प्रकार के होते हैं बाह्य और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४१॥ वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के होते हैं मत्स्य शरीर और साधारण शरीर। मत्स्य का प्रकार के होते हैं पर्याप्त और अपर्याप्त। साधारण दो प्रकार के होते हैं बाह्य और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४२॥ असकायिक दो प्रकार के होते हैं पर्याप्त और अपर्याप्त ॥४३॥ पृथ्वीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीव मिथ्यादृष्टि नामक प्रथम गुणस्थान में ही होते हैं ॥४४॥ दोहन्द्रिय से लेकर अयोगकाली तक अस जीव होते हैं ॥४५॥ बाह्य एकेन्द्रिय से लेकर अयोगकाली तक आन्तर कायिक जीव होते हैं ॥४६॥ उनसे परे सिद्ध होते हैं ॥४७॥ , , ,

इति काय मार्गणा

योग मार्गणा की अपेक्षा मनोयोगी, वचनयोगी, काययोगी और अयोगी जीव होते हैं ॥४८॥ मनोयोग चार प्रकार का होता है सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ॥४९॥ सत्यमनोयोग और अनुभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग काली तक होते हैं ॥५०॥ असत्यमनोयोग और उभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण काल तक होते हैं ॥५१॥ वचनयोग चार प्रकार का होता है, मत्स्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग,

और अनुभववचनयोग ॥५२॥ अनुभववचनयोग षोडशन्द्रिय से लेकर सयोग फेंकली तक होता है ॥५३॥ मत्पचनयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग फेंकली तक होता है ॥५४॥ अमत्पचनयोग और उभयवचनयोग, सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर भीष्मरूपाय गुणस्थान तक होते हैं ॥५५॥ काययोग सात प्रकार का होता है—आँटाग्निक, आँटारिकमिश्र, वैक्रियक वैक्रियकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कामाण ॥५६॥ नियंत्र और मनुष्या के आँटारिक और आँटारिकमिश्रकाययोग होता है ॥५७॥ देव और नागरियों के वैक्रियक, वैक्रियकमिश्र-काययोग होते हैं ॥५८॥ आँटाग्निक और आहारकमिश्र ऋद्धि-धारी मुनियों के होता है ॥५९॥ विश्वहर्षिता सब जीवों के तथा समुद्धान को प्राप्त फेंकली के कामाणकाययोग होता है ॥६०॥ आँटाग्निक और आँटारिकमिश्र षोडशन्द्रिय से लेकर सयोग फेंकली तक होता है ॥६१॥ वैक्रियक और वैक्रियकमिश्र सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर अमयत गुणस्थान तक होता है ॥६२॥ आँटाग्निक और आहारकमिश्र एक प्रभक्त गुणस्थान में ही होता है ॥६३॥ कामाणकाययोग षोडशन्द्रिय से लेकर सयोग फेंकली तक होता है ॥६४॥ सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग फेंकली तक मनोयोग, उचनयोग और काययोग होता है ॥६५॥ षोडशन्द्रिय से लेकर असैनीषचन्द्रिय तक उचनयोग और काययोग होता है ॥६६॥ षोडशन्द्रिय जीवों के काययोग

होता है ॥६८॥ काययोग पर्याप्तकों के और अपर्याप्तकों के होता है ॥६९॥ छह पर्याप्तिया और छह अपर्याप्तिया होती है ॥७०॥ वे सैनी मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुण स्थान में होती है ॥७१॥ पान पर्याप्तिया और पांच अपर्याप्तिया होती है ॥७२॥ वे दोइन्द्रिय से लेकर असेनीपचेन्द्रिय तक होती है ॥७३॥ चार पर्याप्तिया और चार अपर्याप्तिया होती है ॥७४॥ वे षडेन्द्रिय जीर्णों के होती है ॥७५॥ आहारिककाययोग पर्याप्तकों के और आहारिकमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७६॥ वैक्रियरुकाययोग पर्याप्तकों के और वैक्रियरुमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७७॥ आहाररुकाययोग पर्याप्तकों के और आहाररुमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७८॥ सामान्य से नागरी जात मिथ्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥७९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८०॥ इसी प्रकार मयम पृथ्वी में नागरी होते हैं ॥८१॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नागरी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८२॥ सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८३॥ सामान्य से त्रिपंच, मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मयतामयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८५॥

इसी प्रकार सामान्य पचेन्द्रियतिर्यंच और निर्द्वैतिपर्याप्तपचेन्द्रियतिर्यंच गत हैं ॥८६॥ यानिमर्ता पचेन्द्रियतिर्यंचमिध्यादष्टि और मासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८७॥ सम्यग्मिध्यादष्टि, अमयत और मयतामयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८८॥ सामान्य से मनुष्य मिध्यादष्टि, सासादन और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८९॥ सम्यग्मिध्यादष्टि, मयतामयत और मय सयत गुणस्थानों में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९०॥ इसी प्रकार निर्द्वैतिपर्याप्त मनुष्य होते हैं ॥९१॥ मनुष्य म्रियों मिध्यादष्टि और मासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती हैं ॥९२॥ सम्यग्मिध्यादष्टि, अमयत मयतामयत और मय मयत गुण स्थानों में नियम से पर्याप्त होती हैं ॥९३॥ सामान्य से नैमिध्यादष्टि, सासादन और अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९४॥ सम्यग्मिध्यादष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९५॥ मननवासी, व्यतर और ज्योतिषी देव और ममस्त दरिया मिध्यादष्टि और मासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती हैं ॥९६॥ सम्यग्मिध्यादष्टि और असयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होती हैं ॥९७॥ सौधर्म स्वर्ग से लेकर अत्रेयक तुरु पे देव मिध्यादष्टि, मासादन और अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९८॥ सम्यग्मिध्यादष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९९॥ नव अनुदिशों से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक

अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होन है ॥१००॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीपेद, पुरुषपेद, नपुंसकपेद और रू-
रहित जीव होते हैं ॥१०१॥ स्त्रीपेद और पुरुषपेद वाले जीव
असंती मिथ्यादृष्टि से लेकर अनित्यचित्कर्म गुणस्थान तर
होते हैं ॥१०२॥ षडेन्द्रिय से लेकर अनित्यचित्कर्म गुण-
स्थान तर नपुंसक पेद वाले होते हैं ॥१०३॥ आग रू रहित
जीव होते हैं ॥१०४॥ नागका जीव चारों ही गुणस्थानों में
नपुंसक पेदी होते हैं ॥१०५॥ त्रिपंच षडेन्द्रिय से लेकर दोन्द्रिय
तर नपुंसक पेदी होते हैं ॥१०६॥ अर्गनी पनेन्द्रिय से लेकर
मयतामयत गुणस्थान तर तीनों रू वाले होते हैं ॥१०७॥
मनुष्य मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर अनित्यचित्कर्म
गुणस्थान तर तीना रू वाले होते हैं ॥१०८॥ आगे पेद रहित
जीव होते हैं ॥१०९॥ रू चारों ही गुणस्थानों में स्त्रीपेद और
पुरुष पेद वाले होते हैं ॥११०॥

इति वद मार्गणा

रूपार्यमार्गणा में ब्राह्मरूपायी, मानरूपायी, मायारूपायी,
लोभरूपायी और कपाय रहित जीव होते हैं ॥१११॥ षडे-
न्द्रिय से लेकर अनित्यचित्कर्म गुणस्थान तर श्रोत्ररूपायी
मानरूपायी, मायाकपायी जीव होते हैं ॥११२॥ षडेन्द्रिय से
लेकर मक्षममात्राय गुणस्थान तर लोभरूपायी जीव होते
हैं ॥११३॥ रूपायगति जीव उपज्ञानकपाय से लेकर अयोगी

गुणस्थान तब हात है ॥११४॥

इति प्रथम मापरा

ज्ञानमार्गणा की अपेक्षा कुमति, कुश्रुति, कुअवधि, मति, श्रुत, अग्रि, मन पर्यय और नेत्रल नान वाले जीव होते हैं ॥११५॥ एवेन्द्रिय स लेकर सामादन गुणस्थान तब कुमति, कुश्रुतज्ञान वाले होते हैं ॥११६॥ कुअवधिनान सैनी मिथ्यादृष्टि और मामादन जीवों के होता है ॥११७॥ पर्याप्तसों के ही होता है अपर्याप्ततनों के नहीं हात हैं ॥११८॥ मय्यग्निमिथ्यादृष्टि गुणस्थान में आति के तीनों ही ज्ञान कुमति, कुश्रुत और कुअवधि से मिथित होत है ॥११९॥ मति, श्रुत और अग्रिगानी असयत स लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तब होते हैं ॥१२०॥ मन पर्यय ज्ञानीजीव प्रमत्तसयत स लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तब होते हैं ॥१२१॥ पर्ययज्ञानीजीव मयोगनेत्रली अयोगनेत्रली और मिद्ध होते हैं ॥१२२॥

इति ज्ञानमार्गणा

मयम मार्गणा की अपेक्षा मामाग्रि, छंदोपस्थापना, परिहार्ग-विशुद्धि, मूक्षममापराय, यथारयात, मयतामयत और अमयत जीव होते हैं ॥१२३॥ मयत जीव प्रमत्त से लेकर अयोगनेत्रली गुणस्थान तब होते हैं ॥१२४॥ मामाग्रि और छंदोपस्थापना मयतजीव प्रमत्तमयत से लेकर अनिष्टचिह्नरणा गुणस्थान तब होते हैं ॥१२५॥ परिहार्गविशुद्धि जीव प्रमत्त और अमयत गुणस्थान स होत है ॥१२६॥ मूक्षम मापरा सयत जीव ए

सूक्ष्म मापकाय गुणस्थान म हा होत है ॥१२७॥ याम्यात जीव उग्रात रुपाय से लेकर अयोगसेवती गुणस्थान तरु होते ह ॥१२८॥ सयग्रामयत जीव एव सयतामयत गुणस्थान मे हा होते ह ॥१२९॥ अमयतजीव एवन्द्रिय स लेकर अमयत गुणस्थान तरु होते ह ॥१३०॥

इति न्ययम मार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शन, अक्षुदर्शन, अग्निदर्शन और नेत्र दर्शन वाले जीव हात ह ॥१३१॥ अक्षुदर्शन वाले जीव चक्षुन्द्रिय से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तरु होत है ॥१३२॥ अक्षुदर्शन वाले जीव एवेन्द्रिय स लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तरु होत है ॥१३३॥ अग्निदर्शनराले जीव अमयत स लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तरु हात ह ॥१३४॥ नेत्रदर्शन वाले जीव मयोगसेवती, अयोगसेवती और मिद्ध हात ह ॥१३५॥

इति वर्जन मार्गणा

लेण्यामार्गणा की अपक्षाकृष्ण, नील, साधत, पीत पद्म, शुक्ल लेण्यागाल और अलेण्यागाले जीव होत ह ॥१३६॥ कृष्ण नान और काधत लेण्यागाल जीव एवेन्द्रिय म लेकर अमयत गुणस्थान तरु होते है ॥१३७॥ पीत और पद्मलेण्या गाल जीव सैनी मित्र्यादृष्टि म लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तरु हात है ॥१३८॥ शुक्ल लेण्यागाले जीव सैनी मित्र्यादृष्टि मे लेकर मयागसेवती गुणस्थान तरु होत है ॥१३९॥ आग लेण्या-

गहित जीव होते हैं ॥१४०॥

इति लया मार्गः

भयमार्गणा की अपेक्षा भव्य और अभव्य जीव होते हैं ॥१४१॥ भव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर अयागिरेयली गुण-भ्यान तक होते हैं ॥१४२॥ अभव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर मैत्री मिथ्यादृष्टि गुणभ्यान तक होते हैं ॥१४३॥

इति भय मार्गः

सम्यक्त्वमार्गणा की अपेक्षा क्षायिक, वेदक, उज्जम, मामादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि आग मिथ्यादृष्टि जीव तक हैं ॥१४४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव अमयत से लेकर अयागिरेयली गुणभ्यान तक होते हैं ॥१४५॥ उदकसम्यग्दृष्टि जीव अमयत से लेकर अमयत गुणभ्यान तक होते हैं ॥१४६॥ उज्जम सम्यग्दृष्टि जीव अमयत से लेकर उज्जम कषाय गुणभ्यान तक होते हैं ॥१४७॥ मामादन सम्यग्दृष्टि जीव एकर मामादन गुणभ्यान में ही तक हैं ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव एकर सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणभ्यान में ही तक हैं ॥१४९॥ मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रिय से लेकर मैत्री मिथ्यादृष्टि तक होते हैं ॥१५०॥ मामान्य से नागरी जीव अमयत गुणभ्यान में क्षायिक वेदक आग उज्जमसम्यग्दृष्टि तक हैं ॥१५१॥

राप्रकार प्रथम में दो क नागरी तक हैं ॥१५२॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नागरी जीव अमयत गुणभ्यान में क्षायिकसम्यग्दृष्टि नहीं तक गए हैं ॥१५३॥

दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५३॥ तिर्यंच असमयत गुणस्थान में
 क्षायिक उत्पन्न और उपगम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५४॥
 नयतामयत गुणस्थान में क्षायिकसम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं,
 शेष के दो सम्यग्दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५५॥ इसी
 प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच और पञ्चद्रियनिवृत्तिपर्याप्ततिर्यंच
 होते हैं ॥१५६॥ योनिमयी पञ्चन्द्रिय तिर्यंच में असमयत और
 नयतामयत गुणस्थान में क्षायिकसम्यग्दर्शन नहीं होता,
 शेष के दो सम्यग्दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५७॥ मनुष्य
 असमयत, नयतामयत और समयत गुणस्थानों में क्षायिकषेदध
 और उपगम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५८॥ इसीप्रकार निवृत्ति
 पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यत्वियों में भी जानना चाहिये ॥१५९॥
 फिर असमयत गुणस्थान में क्षायिक, उत्पन्न और उपगम सम्यग्-
 दृष्टि होते हैं ॥१६०॥ भवनरामो, व्यतर और ज्योतिषी द्वय
 तथा समस्त द्रवियों असमयत गुणस्थान में क्षायिक सम्यग्-
 दर्शन जाती नहीं होती है केवल दो सम्यग्दर्शनों जाती
 होती हैं ॥१६१॥ सौधर्मस्वर्ग में लम्बर सर्वार्थसिद्धि तत्त्व के द्वय
 असमयत गुणस्थान में क्षायिक उत्पन्न और उपगम सम्यग्दृष्टि
 होते हैं ॥१६२॥

इति सम्यक्त्व मार्गज्ञा

मैंना मार्गज्ञा की अपेक्षा सैनी और अमैनी जाय होत
 है ॥१६३॥ सैनी जीव मिथ्यादृष्टि में लम्बर भीष्मरूपाय गुण-
 स्थान तत्त्व होते हैं ॥१६४॥ असनी जीव एकेन्द्रिय से लम्बर

संज्ञानीत्यचन्द्रिय तत्र होते हैं ॥१६५॥ आहारक मांसाहारक
सहाराक-आहारक-अनाहारक जीव होते हैं ॥१६६॥ आहारक जीव
अचन्द्रिय से, रोग-अयोग्य-जीव गुणस्थान तत्र होते हैं ॥१६७॥
अचन्द्रिय-जीव, समुदाय के-जीव, अयोग्य-जीव और
सिद्धजीव अनाहारक होते हैं ॥१६८॥

इति सप्त अध्यायः

अथ सस्याधिकारः

संज्ञानी कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार
हैं ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव जन्य हैं ॥२॥ काल
की अपेक्षा अनन्तान्त-परिमाण की और उत्सर्गिणी के द्वारा
पूरे नहीं होते ॥३॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तान्त, लार प्रमाण
है ॥४॥ उपयुक्त तीनों प्रमाणों का ज्ञान ही भाव प्रमाण
है ॥५॥ साक्षात्कृत से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तत्र प्रत्येक
गुणस्थान-तत्र-पक्ष के असंख्यात-मात्र मात्र है इन चार गुण-
स्थानों में प्रत्येक की अपेक्षा अन्तरमुद्रित से पक्ष पूर्ण होता
है ॥६॥ अमत्त जीव कोटि पृथक्त्व है ॥७॥ अमत्त जीव
संख्यात है ॥८॥ चारों गुणस्थानों के उपरामक जैव्य की
अपेक्षा, एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्ट रूप से यौवन
होत है ॥९॥ काल की अपेक्षा मचित हुये सभी जीव संख्यात
होते हैं ॥१०॥ चारों गुणस्थानों के सपर और अयोग्य-जीव

[१४]

जीव जघन्य अपेक्षा एक या दो अथवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से पञ्चो आठ होते हैं ॥११॥ काल की अपेक्षा सचित्त हुये मर्यात होते हैं ॥१२॥ सयोगिनेवनी जीव जघन्य एक या दो अथवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से पञ्चो आठ होते हैं ॥१३॥ काल की अपेक्षा लक्ष पृथक्त्व होते हैं ॥१४॥

इति सामान्य कथन

विशेष गतिमार्गणा से नरकगति में सामान्य नारक्तियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥१५॥ काल की अपेक्षा असरयातासरयात, अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥१६॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगत्तर के असख्यातवें भागमात्र अमरयात जगत्त्रेणी प्रमाण हैं । उन जगत्त्रेणियों की दिक्भस्वी, सूच्यगुल के प्रथम वर्गमूल को उसी के द्वितीय वर्गमूल से गुणित करने पर जितना लब्ध आवे वतनी है ॥१७॥ सासादन से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान हैं ॥१८॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी में नारक जीव राशि है ॥१९॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक प्रत्येक पृथ्वी के नारक्तियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥२०॥ काल की अपेक्षा अमरयातासरयात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥२१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगत्त्रेणी के असख्यातवें भाग प्रमाण हैं । उस जगत्त्रेणी के असख्यातवें भाग की जो श्रेणी है उसका आयाम असख्यात कोटि योजन है, जिस अमरयात

कोटि योजन का प्रमाण, जगभ्रंश के सख्यात वर्गमूलों के परस्पर गुणा करने से जितना प्रमाण उतना ही उत्तम है ॥२२॥ सासादन से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥२३॥ तिर्यच गति के सामान्यतिर्यचों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयतासयत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामान्य कथन के समान हैं ॥२४॥ सामान्य पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥२५॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥२६॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से असख्यात गुणेहीन काल से जगमतर पूरा होता है ॥२७॥ सासादान से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥२८॥ पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥२९॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥३०॥ क्षेत्र की अपेक्षा देव, अवहारकाल से सख्यातगुणे हीन काल में जगमतर पूरा होता है ॥३१॥ सासादन से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥३२॥ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥३३॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥३४॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से सख्यातगुणे काल से

जगत्तर पूरा होता है ॥३५॥ सामान्य मे लेकर सयतासयत
 गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान मे पुर्य क असत्यतरे भाग
 है ॥३६॥ पचेन्द्रिय त्रितय अपर्याप्त जीव असत्यात है ॥३७॥
 काल की अपेक्षा असत्यातामस्यात, अपरिणिर्णयों और
 उत्परिणिर्णयों द्वारा पूरे होते है ॥३८॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों
 के अवदाकाल मे - असत्यात गुण है, हीन, काल, से
 जगत्तर पूरा होता है ॥३९॥ सामान्य, मनुष्यों, म
 मिथ्यादृष्टि, जीव - असत्यात है ॥४०॥ काली, अपेक्षा
 असत्यातामस्यात अपरिणिर्णयों, आर-उत्परिणिर्णयों द्वारा पूरे
 होते है ॥४१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगत्त्रेणी के असत्यातवे
 भागप्रमाण है, इस त्रेणी का आयाम असत्यात पुरा साजन
 है । सूर्यगुल के भ्रम वर्गमूल का सूर्यगुल के तृतीय तर्ममूल
 मे, गुणित कहे जा लक्ष्य आवे उमे शलाकरूप, स, दरापित
 काके द्वाधिक जगत्त्रेणी पूर्ण होती है ॥४२॥ साम्प्रदृक् स लेकर
 सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म सत्यात है ॥४३॥
 प्रमत्त स लेकर, अयोगिकेस्ती, गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान
 म सत्यात है ॥४४॥ मनुष्य, पर्याप्तो म मिथ्यादृष्टि, मनुष्य
 कोडाकोडाकोडि के क्तरकोडाकोडाकोडाकोडि के त्रेत्रे, द्वात्रिंश
 के क्तर और सात घर्म के नीचे है ॥४५॥ सामादन मे लेकर
 सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म सत्यात है ॥४६॥ प्रमत्त से लेकर अयोगिकेस्ती गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थान म सत्यात है ॥४७॥ मनुष्यनियों मे मिथ्यादृष्टि

जीर कोड़ाकोड़ाकोड़ी के ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ी के नीचे
 छठवें वर्ग के ऊपर और मानवें वर्ग के नीचे मध्य की सख्या-
 प्रमाण है ॥४८॥ सामान्य में लेकर अयोगिस्वेली गुणस्थान
 नरु प्रत्येक गुणस्थान में जीर मन्त्रात है ॥४९॥ लब्धपर्याप्त
 मनुष्य असंख्यात है ॥५०॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात
 अपसर्पिलियों और उत्सर्पिलियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥५१॥
 क्षेत्र की अपेक्षा जगत्त्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण है । उन
 जगत्त्रेणी के असंख्यातवें भागरूपे त्रेणी का आयाम असंख्यात
 कंगोड योजन है । सून्यगुल के तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम
 वर्गमूल को गङ्गाकारूप से स्थापित करके रूपोधिक जगत्त्रेणी
 पूर्ण होती है ॥५२॥ देवगति प्रतिपन्न सामान्य देवों में मिथ्या-
 दृष्टि जीव असंख्यात है ॥५३॥ काल की अपेक्षा असंख्याता-
 संख्यात अपसर्पिलियों और उत्सर्पिलियों के द्वारा पूरे होते
 हैं ॥५४॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगत्तर के दोर्मा छप्पन अंगुलों
 के वर्गरूप प्रतिभाग से देव राशि आती है ॥५५॥ सासादन,
 सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्ज्ञि यस्य के असंख्यातवें
 भाग है । ॥५६॥ भवनर्मा देवों में मिथ्यादृष्टि जीव अम-
 र्ण्यात है ॥५७॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अपस-
 र्पिलियों और उत्सर्पिलियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥५८॥
 क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात जगत्त्रेणी प्रमाण है जो असंख्यात
 जगत्त्रेणियां जगत्तर के असंख्यातवें भागप्रमाण है उन अम-
 र्ण्यात जगत्त्रेणियों की निष्कभसूची, सून्यगुल को सून्यगुल

ने प्रथम वर्गमूल से गुणित करके जो लब्ध, आये, उतनी
 ॥५६॥ मामादन, मम्यग्मिध्यादष्टि, और असयत सम्यग्
 दष्टि मामान्य, फलन के समान हैं- ॥६०॥ व्यन्तर
 दृष्टि म- मिध्यादष्टि जाय असख्यात, हैं ॥६१॥ कालकी
 अपेक्षा अमरयातासख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों
 द्वारा पूरे होते हैं ॥६२॥ क्षेत्र-की, अपेक्षा जगप्रतर, के
 सरयातमो, योजनी के, वर्गरूप प्रतिभाग से राशि, आती
 है ॥६३॥ सामादन, -मम्यग्मिध्यादष्टि और असयत सम्यग्-
 दष्टि फल्य, के अमरयातय भाग हैं, ॥६४॥ जोतिपी देवों की
 मरुया मामान्य देवों की मरुया से कुछ, कम है ॥६५॥ सौधर्म
 और ऐशान, कलागामी देवों में मिध्यादष्टि, जीय असख्यात
 है ॥६६॥ कालकी अपेक्षा असख्यातामरयात अपमर्पिणियों और
 उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते, हैं ॥६७॥ क्षेत्र की अपेक्षा असख्यात
 जगध्रेणी प्रमाण है । जो असरयात जगध्रेणियों का प्रमाण जग-
 प्रतर के, असख्यातवे, भाग है उन असरयात, जगध्रेणियों की
 विष्कम्भकी सूच्यगुल ने द्वितीय वर्गमूल को तृतीय वर्गमूल
 से गुणा करने पर, जितना, लब्ध, आये, उतनी, है ॥६८॥
 मामादन, सम्यग्मिध्यादष्टि, और असयत सम्यग्दष्टि, फल्य
 के असरयातवे, भाग है ॥६९॥ सनत्कुमार ॥ लेकर महेश्वर
 तक के, कलागामी देव माननी, म- की के नागरिया के करन
 समान है ॥७०॥ आनत से लेकर नव अयस्क तक विमानवामी
 देवों में मिध्यादष्टि से लेकर असयत, गुणम्यान तक प्रत्येक

गुणस्थान में पत्य के असख्यातवें भाग हैं । इन उपयुक्त जीव-
 गणियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पत्य पूरा होता है ॥७१॥
 अनुदिश विमान से लेकर अपराजित विमान तक असंयत
 सम्यग्दृष्टि देव पत्य के असख्यातवें भाग हैं । इन उपयुक्त
 जीवराशियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पत्य पूरा होता है ॥७२॥
 मर्वाधिसिद्धि विमानवासी देव सख्यात है ॥७३॥
 इति गतिमार्गणा

इन्द्रियमार्गणा से सर्वप्रकार के एकेन्द्रिय जीव अनन्त है ॥७४॥
 कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के
 द्वारा पूरे नहीं होते हैं ॥७५॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त
 सौरुप्रमाण हैं ॥७६॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय जीव
 तथा उन्हीं के पर्याप्त अपर्याप्त जीव असख्यात हैं ॥७७॥ काल-
 की अपेक्षा, असख्यात, अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के
 द्वारा पूरे होते हैं ॥७८॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के असख्यातवें
 भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतुर पूरा होता है पर्याप्तों से
 सूक्ष्मगुल के असख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से और
 अपर्याप्तों से सूक्ष्मगुल के असख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से
 जगप्रतुर पूरा होता है ॥७९॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय
 पर्याप्त, मिथ्यादृष्टि, असख्यात हैं ॥८०॥ कालकी अपेक्षा
 असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे
 होते हैं ॥८१॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के असख्यातवें भाग के वर्ग-
 रूप प्रतिभाग से और सूक्ष्मगुल के सख्यातवें भाग के वर्गरूप

प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥८२॥ सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, और वायु, तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, और प्रत्येक वनस्पतिजीव के बादर अपर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥८३॥ पञ्चन्द्रिय असंख्यात जीव असंख्यात हैं ॥८४॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासरयात अपसरिणियों और उत्सरिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८५॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के असंख्यातों भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥८६॥

इति इन्द्रियमार्गाणां

सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, और वायु, तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, और प्रत्येक वनस्पतिजीव के बादर अपर्याप्त जीव तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, के सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त जीव असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥८७॥ पृथ्वी अप और प्रत्येक वनस्पति के बादर पर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥८८॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासरयात अपसरिणियों और उत्सरिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८९॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के असंख्यातों भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥९०॥ बादर तजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यात हैं । यह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आरतियों के वर्गरूप है जो आरती के घन के भीतर आता है ॥९१॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥९२॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासरयात अपसरिणियों और उत्सरिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥९३॥ क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात जग

प्रतमभाग है, जा अमर्यात जगप्रतरप्रमाण लोक के सत्या-
 त्वें भाग है ॥६४॥ वनस्रतिकाय और निगोट वादर सूक्ष्म-
 के पर्याप्त अर्याप्त जीव अनन्त है ॥६५॥ कान की अपेक्षा अनन्ता-
 न्त अस्मिन्निष्ठों और उत्सर्गिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते
 हैं ॥६६॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोक प्रमाण हैं ॥६७॥
 सामान्य त्रसनायिक और त्रसनायिकपर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि
 जीव असर पात है ॥६८॥ काल की अपेक्षा अमर्यातामर्यात
 अपस्मिन्निष्ठों और उत्सर्गिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥६९॥
 क्षेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के असंख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रति
 भाग से और सूक्ष्मगुल के सत्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से
 जगप्रतर पूरा होता है ॥१००॥ सामादन से लेकर अयोगिनी
 रचनी गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के
 प्रमाण हैं ॥१०१॥ त्रसनायिक लयपर्याप्त जीवों का प्रमाण
 असर पात है ॥१०२॥

इति कार्यमार्गणा

योगमार्गणा से सब मनायोगियों और तीन वचनयोगियों में
 मिथ्यादृष्टि जीव अमर्यात है ॥१०३॥ मासादन से लेकर
 मयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में केवल
 असर पातवें भाग है ॥१०४॥ प्रमत्त से लेकर सयोगिनी रचनी
 गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में मर्यात है ॥१०५॥ सामान्य
 रचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टि
 जीव असर पात है ॥१०६॥ काल की अपेक्षा असर पाता-

सरयात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के ढाग पर होते हैं ॥१०७॥ सत्र की अपेक्षा अंगुल के सरयातों भाग के र्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतरपूरा होता है ॥१०८॥ सासादन आदि शप गुणस्थानयुक्तों सासादन आदि मनोयोगराशि के सामान हैं ॥१०९॥ सामान्य काययोगियों में और औदार्यिक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान है ॥११०॥ सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगियों के समान हैं ॥१११॥ औदार्यिक मिश्रकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥११२॥ सासादन सामान्य कथन के समान हैं ॥११३॥ असंयत और मयोगिकेवली सरयात हैं ॥११४॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव दोनों से सरयातों भाग कम है ॥११५॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत वैक्रियक काययोगी जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥११६॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव दोनों से सरयातों भाग है ॥११७॥ सासादन और असंयत सामान्य कथन के समान हैं ॥११८॥ आहारककाययोगियों में प्रमत्तसंयत जीव चोचन हैं ॥११९॥ आहारकमिश्र काययोगियों में प्रमत्तसंयत जीव सरयात हैं ॥१२०॥ कार्माणकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान है ॥१२१॥ सासादन और असंयत कार्माणकाययोगी जीव प्रत्यक्ष के असंख्यातों भाग है ॥१२२॥ मयोगिकेवली कार्माणकाययोगी जीव सरयात है ॥१२३॥

इति योगमायणा

वेदमार्गणा से स्त्रीवेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥१२४॥ सासादन से लेकर मयतामयत "गुणस्थान तक" मत्त्येक गुणस्थान में पश्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥१२५॥ प्रमत्त म लेकर अनिष्टतिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान नरु के जीव संख्यात हैं ॥१२६॥ पुरुषवेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥१२७॥ सासादन से लेकर अनिष्टतिकरण उपशमक और क्षपक तक के जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१२८॥ नपुंसकवेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संपतासयत गुणस्थान तक सामान्य कथन के समान हैं ॥१२९॥ प्रमत्त से लेकर अनिष्टतिकरण, उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक के जीव संख्यात हैं ॥१३०॥ अपगतवेदियों में ताने गुणस्थानरती उपशमक जीव प्रवेश से एक, द्वाया तीन और उत्कृष्टरूप से चार हैं ॥१३१॥ काल की अपेक्षा उपशमक संख्यात हैं ॥१३२॥ तीन गुणस्थानरती क्षपक और अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३३॥ मयोगकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३४॥

इति वेदमार्गणा

कपायमार्गणा से क्रोधकपायी, मानकरपायी, मायाकपायी और लोभकपायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संपतासयत गुणस्थान नरु मत्त्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३५॥ प्रमत्त से लेकर अनिष्टतिकरण गुणस्थान तक

सरयात है ॥१३६॥ इतना विशेष है कि लोभकपायी जीवों में सूक्ष्मसांप्रदायिक उपशमक और क्षयक जीव सामान्यकथन के समान है ॥१३७॥ कपायग्रहित जीवों में उपशान्तकपाय जीव सामान्य कथन के समान है ॥१३८॥ क्षीणकपाय और अयोगिकेवली सामान्यकथन के समान हैं ॥१३९॥ सयोग केनी सामान्यकथन के समान हैं ॥१४०॥

इति कपायमार्गी ॥

ज्ञानमार्गीणा समत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टि और सासादन जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१४१॥ विभक्तज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीव दोनों से कुछ अधिक हैं ॥१४२॥ सामादन जीव फल के अन्तर्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥१४३॥ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और अधिज्ञानी जीवों में अक्षयत से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१४४॥ इतना विशेष है कि अधिज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सरयात है ॥१४५॥ मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक जीव सरयात है ॥१४६॥ केवल ज्ञानियों में अयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१४७॥

इति ज्ञानमार्गी ॥

सयममार्गीणा से सामान्य सयमियों में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक के जीव प्रत्येक गुणस्थान में सरयात

है ॥१४८॥ सामायिक और छेदोपस्थापन जीवों में प्रमत्त स
लेकर अनिट्तिमरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक
प्रत्येक गुणस्थान में मन्व्यात है ॥१४९॥ पण्डित विशुद्धि में
प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संर्यात है ॥१५०॥ सूक्ष्मसांपराय
में सूक्ष्मसांपरायिक उपशमक और क्षपक जीव सामान्य कथन के
समान है ॥१५१॥ यथाख्यात म ग्याहवे, वारहवे, तेहवे,
और चौदहवे गुणस्थानवर्ती, जीवों का प्रमाण सामान्य कथन
के समान है ॥१५२॥ सयतामयत जीव प्रत्येक अमरयातरे
भाग है ॥१५३॥ असयतों में मिथ्यादृष्टि से लेकर
अमयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान
है ॥१५४॥

इति स्वयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से बहुदर्शनी-जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव अस-
न्यात है ॥१५५॥ पालकी अपेक्षा असरयातासरयात अपस-
पिणियों और वृत्तपिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥१५६॥
सेत्र की अपेक्षा सूक्ष्मगुल के मरुयातरे भाग के वर्गरूप प्रति-
भाग से जगत्तर पूरा होता है ॥१५७॥ सामादन से लेकर
क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य
कथन के समान है ॥१५८॥ अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि
से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में
जीव सामान्य कथन के समान है ॥१५९॥ अवधिदर्शनी
जीव अधिज्ञानियों के समान है ॥१६०॥ केवलदर्शनी जीव

केवलज्ञानियों के समान है ॥१६१॥

इति चर्चनार्थात्

लेख्यमार्गणां मे कृष्ण, नील और काफान रङ्गवाले जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंख्य गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१६२॥ तैजोलेख्य वाले जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव अयोगिष्वर्गियों में कुछ अधिक है ॥१६३॥ सासानु मे लेकर मयनामयन गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पश्य के असंख्यातों भाग है ॥१६४॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात है ॥१६५॥ पद्मलेख्य वालों में मिथ्यादृष्टि जीव सैनी परन्द्रिय त्रियंर यौनमर्ता जीवों के संख्यातों भाग है ॥१६६॥ सासानु से लेकर मयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पश्य के असंख्यातों भाग है ॥१६७॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात है ॥१६८॥ शुक्ललेख्यवालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव पश्य के असंख्यातों भाग प्रमाण है । इन जीवों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त ज्ञान से पश्य पूरा होता है ॥१६९॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात है ॥१७०॥ अपूर्णकरण से लेकर संयोगिष्वर्गी गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१७१॥

इति लेख्यमार्गणां

अव्यमार्गणां स अव्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिष्वर्गी

गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७२॥ अथवा जीव अनन्त है ॥१७३॥

इति सम्यग्दर्शनात् ॥ १७४ ॥ सम्यक्त्वमार्गणा से सम्यग्दृष्टियों में असयत से लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में असयत जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७५॥ सयतासयत से लेकर उपशान्त कपाय गुणस्थान तक सरयात है ॥१७६॥ चारों क्षणक और अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७७॥ सयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७८॥ वेद में असयत से लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७९॥ उपशम में असयत और सयतासयत जीव सामान्य कथन के समान है ॥१८०॥ प्रमत्त से लेकर उपशान्त कपाय गुणस्थान तक जीव सरयात है ॥१८१॥ सासादनसम्यग्दृष्टि जीव पक्ष के असख्यातवें भाग है ॥१८२॥ सम्यग्मिध्यादृष्टि जीव पक्ष के असख्यातवें भाग है ॥१८३॥ मिध्यादृष्टि जीव अनन्तान्त है ॥१८४॥ इति सम्यक्त्वमार्गणात् ॥ १८५ ॥ सैनीमार्गणा से सैनियों में मिध्यादृष्टि जीव असख्यात है ॥१८५॥ सासादन से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१८६॥ असैनीजीव अनन्त है ॥१८७॥ काल की अपेक्षा अनन्तान्त

अपमर्षिणियों और उत्सर्षिणियों ने द्वाग पूर नहीं होत
हैं ॥१८८॥ क्षेत्र की अपेक्षा अन्न नान्त लोक प्रमाण है ॥१८९॥

॥८८९॥ इति सनोमर्षणा - १८८९

आहारमार्गणा स आहारकों में मिथ्यादृष्टि स लेकर मयोगि-
फेरली - गुणस्थान, तत्क प्रत्येक गुणस्थान में तीनों सामान्य
कथन के समान है ॥१९०॥ अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-
दनसम्यग्दृष्टि अमयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिफेरली जीवों का
प्रमाण धर्मणा रूपयोगियों के समान है १९१॥ अयोगिफेरली
जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१९२॥

॥१९१॥ इति आहारमार्गणा - १९११

॥१९२॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९३॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९४॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९५॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९६॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९७॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९८॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥१९९॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२००॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२०१॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२०२॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२०३॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२०४॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

॥२०५॥ इति अनाहारकों स मिथ्यादृष्टि सामा-

विशेष गति मार्गणा से जगत्गति में, सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥५॥ इसी प्रकार सातों पृथ्वियों के नारकी जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६॥ त्रिपंच गति में सामान्य त्रिपंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७॥ सासादन से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥८॥ सामान्य पंचन्द्रिय त्रिपंच पंचन्द्रिय पर्याप्त और पंचन्द्रिय त्रिपंचपोनिमती जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अमयतामयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥९॥ पंचन्द्रिय त्रिपंच पर्याप्त जव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥१०॥ मनुष्य गति में सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥११॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान ॥१२॥ लघु पर्याप्त मनुष्य लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥१३॥ देवगति में सामान्य देव मिथ्यादृष्टि से लेकर अमयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के देव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥१४॥ भवनगोष्ठी से लेकर अवेयक तक के देवों का क्षेत्र इसी प्रकार होता है ॥१५॥ अनुदिशा से लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तक के अमयतदय लोक के असख्यातवें

भाग में रहते हैं ॥१७॥

इति शक्तिमार्गणा

सर्वमसार के एकेन्द्रिय जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥१७॥
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव और उन्हीं के पर्याप्त
तथा अपर्याप्त जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते
हैं ॥१८॥ सामान्य पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में
मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते
हैं ॥१९॥ सयोगिकेवलियों का क्षेत्र सामान्य कथन व
समान है ॥२०॥ लेख्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीव लोक के अम
ख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२१॥

इति इन्द्रियमार्गणा

सामान्य प्रथ्वी, अप, अग्नि वायु के जीव और बादर, पृथ्वी, अप,
तेज, वायु और प्रत्येक बनस्पति के अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म
पृथ्वी, अप, तेज, वायु के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक
में रहते हैं ॥२२॥ पृथ्वी, अप, तेज, और प्रत्येक
बनस्पति के बादर पर्याप्त जीव लोक के असख्यातवें भाग में
रहते हैं ॥२३॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव लोक के
सख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२४॥ बनस्पतिकाय और निर्गोद
बादर सूक्ष्म के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक में रहते हैं
॥२५॥ सामान्य असकायिक और असकायिक पर्याप्त जीवों में
मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक

गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२६॥
सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥२७॥
वैक्रियिक लब्धपर्याप्त जीव लोक के असंख्यातवें भाग में
रहते हैं ॥२८॥

इति कायमार्गेणा

योग मार्गेणा की अपेक्षा सर्वमनोयोगी और सर्व
वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर सयोगि-
केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के
असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२९॥ काययोगियों में मिथ्या-
दृष्टि जीवों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥३०॥ सासादन से लेकर
भीष्मकाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के
असंख्यातवें भाग में रहने हैं ॥३१॥ सयोग केवली का
क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥३२॥ औदारिक काय-
योगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥३३॥
सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-
स्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३४॥
औदारिक मिथकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में
रहते हैं ॥३५॥ सासादन, असयत और सयोगिकेवली जीव
लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३६॥ वैक्रियिक
काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक के
जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३७॥ वैक्रियिकमिथ-
काययोगियों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्थानवर्ती

जीव लोक के असरयातव भाग में रहते हैं ॥३८॥ आहारकाय योगियों में और आहारमिश्रकाययोगियों में प्रमेतमयत गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयातव भाग में रहते हैं ॥३९॥ कामाणकाययोगियों में मिथ्यादृष्ट जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥४०॥ मामादन और असयत जीव लोक के असरयातव भाग में रहते हैं ॥४१॥ सयोगिनेवली लोक के असरयातव बहुभागों में और सर्वलोक में रहते हैं ॥४२॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा की अपेक्षा स्त्रीवर्दी और पुरुष वर्तियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयातव भाग में रहते हैं ॥४३॥ नपुमरुवर्दी मिथ्या दृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतरु प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र मामान्यकयन के समान है ॥४४॥ अपगतवर्दी जीवों में अनिवृत्तिकरण अवैदभाग से लेकर अयोगिनेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयातव भाग में रहते हैं ॥४५॥ सयोगिनेवली का क्षेत्र सामान्यकयन के समान है ॥४६॥

इति वेदमार्गणा

वपायमार्गणा से कारकपायी, मानकपायी, मोयाकपायी और लोभकपायी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥४७॥ मामादन में लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयातव भाग

में रहते हैं ॥४८॥ विश्वेष गुण यह है कि लोभरूपायी जीवों में सूक्ष्मसाम्यरूपिक उभयमक और सप्तक जीव लोक के अस्तरपातवें भाग में रहते हैं ॥४९॥ अरूपायी जीवों में द्रवशान्तरूपाय आदि चारों गुणस्थानों का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥५०॥

इति दशममार्गः

ज्ञानमार्गण से कुमति और कुश्रुतनानियों में मिथ्यादृष्टियों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥५१॥ सामादन का क्षेत्र लोक का अस्तरपातवा भाग है ॥५२॥ विभगनानियों में मिथ्यादृष्टि और मासादन गुणस्थानवर्ती जीव लोक के अस्तरपातवें भाग में रहते हैं ॥५३॥ मतिश्रुत और अवधिज्ञानियों में असेयत से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के अस्तरपातवें भाग में रहते हैं ॥५४॥ मन पर्ययज्ञानियों में प्रमत्तमयत गुणस्थान से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के अस्तरपातवें भाग में रहते हैं ॥५५॥ केरली नानियों में संयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥५६॥ अयोगिकेवली लोक के अस्तरपातवें भाग रहते हैं ॥५७॥

इति ज्ञानमार्गः

मयम मार्गण से सामान्य मयत प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के अस्तरपातवें भाग में रहते हैं ॥५८॥ संयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥५९॥ सामायिक और छेदो-

पम्पापना प्रमत्तसयत गुणस्थान से लेकर अनिवृत्तिरूप गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६०॥ परिहार विभुदिम प्रमत्त और अमत्त जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६१॥ सूक्ष्मसापराधिक में सूक्ष्म सापराधिक उपशमक क्षपक जीव लोक के अमख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६२॥ यथाख्यात में उपशान्दकपाय से लेकर अयोनि केवली गुणस्थान तक चारों गुणस्थान वाले मामान्यरूपन के समान हैं ॥६३॥ सयतामयत जीव लोक के अमख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६४॥ असयतों में मिथ्यादृष्टि का क्षेत्र सर्व लोक है ॥६५॥ सामादन सम्प्राग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६६॥

इति सयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण कपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६७॥ अक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्व लोक में रहते हैं ॥६८॥ सामादन से लेकर क्षाणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६९॥ अवधिदर्शनी जीवों का क्षेत्र अवधिज्ञानियों के समान है ॥७०॥ फलदर्शनी जीवों का क्षेत्र लोक का असख्यातवें भाग, लोक का अमख्यात बहुभाग और सर्व लोक है ॥७१॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्यामार्गणा ॥ कृष्ण, नील और कापोत लेश्या वाले

जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७२॥
 सादन, सम्पद्मिथ्यादृष्टि और अभयन जीव लोक
 के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥७३॥ तेजोलेश्यावाले
 और पद्मलेश्यावाले जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्त
 गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्या-
 तवें भाग में रहते हैं ॥७४॥ शुक्ललेश्यावाले जीवों में
 मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥७५॥
 अयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७६॥

इति लेश्यामार्गणा

अभ्यमार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर
 अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का
 क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७७॥ अभव्य जीवों में
 मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७८॥

इति मध्यमार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि
 जीवों में असयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७९॥
 अयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥८०॥ वेदक-
 सम्यग्दृष्टियों में असयत से लेकर अप्रमत्त सयतगुणस्थान तक
 प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते
 हैं ॥८१॥ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवों में असयत से लेकर

उपशान्तस्वाय गुणस्थानं तत्र प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोह
के असरयातये भाग म रहते है ॥८२॥ मासादन जीवों का
क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥८३॥ मय्यग्निध्यादृष्टि
जीवों का क्षेत्र सामान्य पवन के समान है ॥८४॥ मिध्य
दृष्टि जीवों का क्षेत्र सामान्य स्थन के समान है ॥८५॥

इति मय्यकुवमाण्डला

सैनीमार्गणा से सैनी जीवों में मिध्यादृष्टि से लेकर क्षीणस्वाय
गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोह के असरयातये
भागम रहते है ॥८६॥ असैनी जीव सर्वलोक म रहत
हैं ॥८७॥

इति सैनीमार्गणा

आहारमार्गणा स आहारक जीवों में मिध्यादृष्टियों
का क्षेत्र सर्व लोक है ॥८८॥ मासादन से लेकर सयोगि-
केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असरया-
तये भाग में रहते हैं ॥८९॥ अनाहातों में मिध्यादृष्टि जीवों
का क्षेत्र सर्वलोक है ॥९०॥ मासादन, अमयन और
अयोगिकेवली लोक के असरयातये भाग में रहते हैं ॥९१॥
सयोगिकेवली लोक के असरयात बहुभागों म और सर्व
लोक म रहते हैं ॥९२॥

इति आहारमार्गणा

इति छेवाधिकार

अथ स्पर्शनाधिकार ।

स्पर्शने ऋते सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार का है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीयो ने लोक को स्पर्श किया है ॥२॥ साक्षात् जन जीयो ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥३॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ घंटे चौदह भाग त्यों कुछ कम आठ घंटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असम्पात जीवों ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥५॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ घंटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥६॥ सत्तामयत जीवों ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥७॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह घंटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥८॥ प्रवृत्त मयत गुणस्थान सलोक अयोगिनेवली गुणस्थान तत्काल अत्येक गुणस्थानवती जीवों ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥९॥ मयोगिनेवली भगवन्तो ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥१०॥

इति सामान्यऋते ।

विशेष गतिमार्गणा मे नरक गति म मिथ्यादृष्टि सामान्य नाटक जीवों ने लोक को असम्पातवा भाग स्पर्श किया है ॥११॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह घंटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१२॥ साक्षात् नागरियों ने लोक को

असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१३॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१५॥ प्रथम पृथ्वी में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर असयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१६॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर छठी पृथ्वी तक प्रत्येक पृथ्वी के मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१७॥ अतीत काल की अपेक्षा चौदह भागों में से कुछ कम एक दो तीन चार और पांच भाग स्पर्श किये हैं ॥१८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत नारकी जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१९॥ सातवीं पृथ्वी में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२०॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२१॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२२॥ तिर्यंच, गति में मिथ्यादृष्टि जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥२३॥ सासादन जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२४॥ भूत और भविष्य काल की अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२६॥ असयत और मयतासयत गुणस्थानवर्ती तिर्यंचों

ने लोक का असख्यातरा भाग स्पर्श किया है ॥२७॥
 अतीत और अनागत काल की, अपेक्षा कुछ कम बड़े
 चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यच,
 पचेन्द्रिय तिर्यच, पर्याप्त और योनिमनियों में मिथ्यादृष्टि जीवों
 ने लोक का असख्यातरा भाग स्पर्श किया है ॥२९॥ अतीत
 और अनागत काल में सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३०॥ शेष
 तिर्यच गति के जीवों का स्पर्श क्षेत्र सामान्य कथन के समान
 है ॥३१॥ पचेन्द्रिय तिर्यच लब्धपर्याप्त जीवों ने लोक का
 असख्यातरा भाग स्पर्श किया है ॥३२॥ अतीत और अना-
 गत काल में सर्व लोक स्पर्श किया है ॥३३॥ मनुष्य
 गति में सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में
 मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातरा भाग स्पर्श किया
 है ॥३४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्वलोक
 स्पर्श किया है ॥३५॥ सामादन जीवों ने लोक का असख्यातरा
 भाग स्पर्श किया है ॥३६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा
 कुछ कम सात बड़े चौदह भाग स्पर्श किया है ॥३७॥ सम्यग्मिथ्या-
 दृष्टि गुणस्थान से लेकर अयोगिकेयली गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असख्यातरा भाग स्पर्श
 किया है ॥३८॥ सयोगिकेयली जिन्होंने लोक का असख्यातरा
 भाग असख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३९॥
 लब्ध पर्याप्त मनुष्यों ने लोक का असख्यातरा भाग स्पर्श
 किया है ॥४०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व

लोकस्पर्श किया है ॥४१॥ देवगति में मामान्य-मिथ्या दृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का अमरुयातया भाग स्पर्श किया है ॥४२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ पदे चौदह भाग और कुछ कम नौ पदे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥४३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत ने लोक का असंयतातया भाग स्पर्श किया है ॥४४॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ पदे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥४५॥ भजनवासी व्यन्तर और ज्योतिष्क देवों ने मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का अमरुयातया भाग स्पर्श किया है ॥४६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा लोक भाली के चौदह भागों में से कुछ कम साढ़े तीन भाग, आठ भाग और नौ भाग स्पर्श किये हैं ॥४७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत ने लोक का असंयतातया भाग स्पर्श किया है ॥४८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ पदे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥४९॥ सौर्य और ईशान ब्रह्मवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान धर्ती देवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य देवों के समान है ॥५०॥ सन्तुष्टि से लेकर सद्व्यार तक के देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान धर्ती देवों ने लोक का अमरुयातया भाग स्पर्श किया है ॥५१॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ पदे

चौदह भाग स्पर्श किया है ॥५२॥ अनित से लेकर अच्युत तक के देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५३॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम थोड़े चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥५४॥ तब प्रत्येक विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५५॥ मंत्र अनुदिश से लेकर सर्वार्थ सिद्धि तक विमानवासी देवों में असयत सम्यग् दृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५६॥

इन्द्रिय मार्गणा से सर्व प्रकार के पंचेन्द्रिय जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥५७॥ सर्व प्रकार के द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥५९॥ सामान्य पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥६०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम थोड़े चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६१॥ सामादेन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य

रूपन के समान है ॥६८॥ सयोगिकेवली जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य रूपन के समान है ॥६९॥ लक्ष्मीपति पञ्चन्द्रिय जीवों ने लोक का अमरुपातवा भाग स्पर्श किया है ॥६९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६९॥

इति हिममाला ॥६९॥ ॥६९॥
 काम-मार्गणा स सामान्य, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु कायिक जीव तथा बादर, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और चतुर्दश कायिक प्रत्येक शरीर जीव तथा इन्हीं पाँचों के बादर अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, कायिक और इन्हीं सूक्ष्म जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६९॥ बादर, पृथ्वी, अप, क्षेत्र और चतुर्दश कायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवों ने लोक का असरपातवा भाग स्पर्श किया है ॥६९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६९॥ बादर, वायु कायिक जीव पर्याप्त जीवों ने लोक का अमरुपातवा भाग स्पर्श किया है ॥६९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६९॥ चतुर्दश कायिक जीव और लोकोत्तर जीव बादर, सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥७०॥ सामान्य अमरुपातवा और असमरुपातवा जीवों, मन्त्रि, यादृष्टि गुणस्वातन्त्र्य से लेकर अयोगिकेवली गुण स्थान तक प्रत्येक गुणस्वातन्त्र्य जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य

न्य कथनं के समान है ॥७२॥ अमर्यादिक लब्धपर्याप्त
जीवों का स्पर्शन क्षेत्र लोक का अमर्यादित भाग है ॥७३॥
नाना भूत ॥ इति काययोगा ॥ ७४ ॥
योग मार्गणां मे सर्व मनोयोगी और सर्व ध्यानयोगियों में
मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का अमर्यादित भाग स्पर्श किया
है ॥७४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ
वटें चाँदह भाग और सर्व लोक स्वर्ग किया है ॥७५॥ सासा-
दन से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान-
वर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७६॥
प्रमत्त सयत से लेकर सयोगिरेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-
स्थानवर्ती जीवों ने लोक का अमर्यादित भाग स्पर्श किया
है ॥७७॥ काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र
मित्र लोक है ॥७८॥ सासादन से लेकर सीख कपाय गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन
के समान है ॥७९॥ सयोगिरेवली का स्पर्शन क्षेत्र लोक का
अमर्यादित भाग, अमर्यादित बहुभाग और सर्वलोक है ॥८०॥
आचारिक काययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का स्पर्शन क्षेत्र
सर्व लोक है ॥८१॥ सासादन जीवों ने लोक का अमर्यादित भाग
स्पर्श किया है ॥८२॥ अतीत और अनागत काल की
अपेक्षा कुछ कम आठ वटें चाँदह भाग स्पर्श किया है ॥८३॥
सम्पन्निमिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का अमर्यादित भाग स्पर्श
किया है ॥८४॥ असयत और सयतासयत जीवों ने लोक का

असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥८५॥ अतीत और-अ-गत
 काल का अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया
 है ॥८६॥ प्रसन्न सयत् से लेकर सयोगिनेयनी गुणस्यात तर
 प्रत्येक गुणम्यानवर्ती जीवों ने लोक का असख्यातवा-भाग
 स्पर्श किया ॥८७॥ औदारिक, मिश्रकाययोगियों में मिथ्या-
 दृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥८८॥ साक्षादन
 असयत् और-सयोगिनेयनी-जीवों ने लोक का असख्यातवा
 भाग स्पर्श किया है ॥८९॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्य-
 दृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥९०॥
 अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह
 और कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥९१॥ साक्षा-
 दन जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य, कथन के समान है ॥९२॥
 सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत् जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य
 कथन के समान है ॥९३॥ वैक्रियक, मिश्रकाययोगी, जीवों में
 मिथ्यादृष्टि सामादन और असयत् सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक
 का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥९४॥ आहारक काययोगी
 और आहारक मिश्रकाययोगी जीवों में प्रसन्न सयत् ने लोक का
 असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥९५॥ कर्मण काययोगी
 जीवों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के
 समान है ॥९६॥ साक्षादन न लोक का असख्यातवा भाग
 स्पर्श किया है ॥९७॥ तीनों कालों की अपेक्षा कुछ कम ग्या-
 रह न चौदह भाग स्पर्श किया है ॥९८॥ असयत् जीवों ने

लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥६६॥ तीनों
 कालों की अपेक्षा से कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श
 किये हैं ॥१००॥ मयोगिकेवलियों ने लोक का असख्यात
 बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥१०१॥
 वदमार्गणा से स्त्री वेदी, और पुरुष वेदी जीवों ने मिथ्या-
 दृष्टियों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१०२॥
 अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे
 चौदह भाग तथा, सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१०३॥ सासादन
 जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१०४॥
 अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे
 चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०५॥ सम्प-
 मिथ्यादृष्टि तथा असयत जीवों ने लोक का असख्यातवा
 भाग स्पर्श किया है ॥१०६॥ अतीत और अनागत काल की
 अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०७॥
 सयतासयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया
 है ॥१०८॥ अतीत और अनागत काल की निरक्षा से कुछ
 कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०९॥ प्रमत्त
 सयत स लोक की अनिवृत्ति करण उपगमक और निक्षप-
 गुणस्थान तत्त्व प्रत्येक गुणस्थानवा जीवों ने लोक का
 असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥११०॥ नपुंसक वेदी जीवों
 ने मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥१११॥

गुणस्थान, यानों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२०॥

ज्ञानमार्गणा से कुमति और कुश्रुत अज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२३॥

साक्षात् जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२४॥ विभक्त ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का धर्म यात्रा भाग स्पर्श किया है ॥१२५॥ अतीत और अनागत फोला की अपेक्षा आठ घंटे चौदह भाग और सब लोक का स्पर्श किया है ॥१२६॥ सामान्य जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२७॥ भक्तिज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवयवज्ञानियों में अर्मयत से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२८॥ मनोपर्यय ज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२९॥

कल ज्ञानियों में सयोगिकेयली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३०॥ अयोगिकेयली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३१॥

सयम मार्गणा से सयती में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेयली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का

क्षेत्र सामान्य - कथन, के - समान - है ॥१३०॥ सत्यतो
म सयोगिकेयली का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन - के
समान है ॥१३३॥ सामायिक, और छेदोपस्थापना में प्रसक्त
से लेकर, अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक प्रत्येक - गुणस्थानवर्ती
जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन, के समान, है ॥१३४॥
परिहार विशुद्धि में प्रसक्त, और अप्रसक्त, ने लोक, का - असख्या-
तवा भाग स्पर्श किया है - ॥१३५॥ सूक्ष्म, सापरायिक,
सूक्ष्म सापरायिक संप्रक जीवों, का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन
के समान, है ॥१३६॥ यथान्यात में चारों गुणस्थानवर्ती जीवों
का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के - समान है ॥१३७॥ सत्यता-
मयत जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य, कथन - के - समान
है ॥१३८॥ असत्यत, जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असत्यत
गुणस्थान, तक प्रत्येक, गुणस्थानवर्ती, जीवों, का स्पर्शन क्षेत्र
सामान्य कथन, के समान है, ॥१३९॥

इति सयममार्गणा ॥१४०॥
दर्शन मार्गणा से चतुर्दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक
का, असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१४०॥ अतीत - और
अनागत, काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बड़े चौदह भाग, और
सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१४१॥ सामादन, से लेकर क्षीण-
वपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन
क्षेत्र - सामान्य कथन के - समान है, ॥१४२॥ अचक्षु
दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, से लेकर क्षीण वपाय

गुणस्यान तत्र प्रत्येक गुणस्यानवती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य कथन के समान है ॥१४३॥ अर्वाचदर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र अवधि ज्ञानियों के समान है ॥१४४॥ फेवल दर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र फेवल ज्ञानियों के समान है ॥१४५॥

इति दर्शनमार्गका

लेश्यामार्गणा से कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य कथन के समान है ॥१४६॥ सामादन जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१४७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम पाच बटे चौदह, चार बटे चौदह और दो बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१४९॥ तेजो लेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और सामादन जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१५०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५१॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१५२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५३॥ सयतासयत जीवों ने लोक का असंख्यातवा

अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ-उम, डेढ़, बड़े चौदह भाग सर्ग किया है ॥१५५॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीवों का सर्जन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१५६॥ पञ्च लेख्या वालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का अमर्यादतया भाग सर्ग किया है १५७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बड़े चौदह भाग सर्ग किया है ॥१५८॥ मयतामयत जीवों ने लोक का असंस्थातया भाग सर्ग किया है ॥१५९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम पाच बड़े चौदह भाग सर्ग किया है ॥१६०॥ प्रमत्त और अप्रमत्त सयत जीवों का सर्जन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६१॥ शुक्ललेख्या वालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का अमर्यादतया भाग सर्ग किया है ॥१६२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम दस बड़े चौदह भाग सर्ग किया है ॥१६३॥ प्रमत्त से लेकर स्यागिमेरली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का सर्जन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है १६४॥

अने अनागत कालों में भव्य मार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगि-
केयता गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का सर्जन
क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६५॥ अभव्य जीवों ने

मेरे लोक स्पर्श किया है ॥१६६॥

इति मयमगण ॥

सम्यक्त्वमार्गणा से सम्यग्दृष्टियों में असयत से लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन
क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६७॥ क्षायिकों में असयत
सम्यग्दृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान
है ॥१६८॥ मरतासयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक
प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का अस्मर्यादवा भाग स्पर्श
किया है ॥१६९॥ मयागिकेवली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र
सामान्य कथन के समान है ॥१७०॥ वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों
में असयत से लेकर अममगण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान-
वर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान
है ॥१७१॥ आर्षशमिरु-सम्यग्दृष्टियों में असयत सम्यग्दृष्टि
जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७२॥
सयतामयत से लेकर अपशातरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का अस्मर्यादवा भाग स्पर्श
किया है ॥१७३॥ सामादन-जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के
समान है ॥१७४॥ सम्यगभिध्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र
सामान्य कथन के समान है ॥१७५॥ भिध्यादृष्टि जीवों का
स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७६॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा

सैनी मार्गणा से सैनी जीवों में भिध्यादृष्टियों ने लोक का

अमरुपातवा भाग स्पर्श किया है १७७॥ अर्थात् आर्य अनागत
 काल की अपेक्षा कुछ कम आठ घट चौदह भाग आर्य सर्व
 लोक स्पर्श किया है ॥ १७८॥ सामादन से लेकर क्षीण
 कषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन
 क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥ १७९॥ अर्थात्, जीवों न
 सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १८०॥ -

इति सैवामार्गणा

आहार मार्गणा से आहारक जीवों में मिथ्यादर्शियों का
 स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥ १८१॥ सामादन
 से लेकर संयुक्तसंयुक्त गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती
 जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥ १८२॥
 प्रमत्त से लेकर सयोगिकेयली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-
 स्थानवर्ती जीवों ने लोक का अमरुपातवा भाग स्पर्श किया
 है ॥ १८३॥ अनाहारक जीवों में सभवित्र गुणस्थानवर्ती जीवों
 का स्पर्शन क्षेत्र कामाण काययोगियों के क्षेत्र के समान
 है ॥ १८४॥ विशेष बात यह है कि अयोगिकेयलियों ने लोक
 का अमरुपातवा भाग स्पर्श किया है ॥ १८५॥

इति आहारमार्गणा

॥ १८५ ॥

इति स्वर्गनाधिकार

अथ कालाधिकार

काल कथन सामान्य और विज्ञेय की अपेक्षा से दो प्रकार का है ॥१॥ सामान्य से, मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा काल तीन प्रकार हैं अनादि-अनन्त, अनादि-सान्त और सादि-सान्त । इनमें सादि-सान्त का जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्थपुद्गलपरिवर्तन है ॥४॥ सासादन जाव नाना जीवों की अपेक्षा जन्य से एक समय तक हान है ॥५॥ उत्कृष्ट काल पद्यों के असख्यातवें भाग हैं ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल एक समय है ॥७॥ उत्कृष्ट काल छह आयुषी है ॥८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जन्य से अन्तर्मुहूर्त तक हाने हैं ॥९॥ उत्कृष्ट काल जन्य के असख्यातवें भाग हैं ॥१०॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२॥ अमयतसम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट काल कुछ अरिश्त तृतीस भाग हैं ॥१५॥ सयतामयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्य पाटि र्ण प्रमाण है ॥१८॥ प्रमत्त और अप्रमत्त मयत जीव नाना

जीरों की अपेक्षा सरसाल होते हैं ॥१९॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल एक समय है ॥२०॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१॥ चारों उपगमन जीर नाना जीरों की अपेक्षा जगन्य स एक समय तक होता है ॥२२॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य चारों एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५॥ चांग सफर और अयोगिनी जीर नाना जीरों की अपेक्षा जगन्य चारों अन्तर्मुहूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य चारों अन्तर्मुहूर्त है ॥२८॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९॥ मयागि फवली जिन नाना जीरों की अपेक्षा सरसाल होते हैं ॥३०॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३१॥ उत्कृष्ट काल कुद्व कम पूर रोटी है ॥३२॥

इति साम दशरत

विशेष गति मार्गणा स सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि जिन नाना जीरों की अपेक्षा सरसाल होते हैं ॥३३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३४॥ उत्कृष्ट काल तेतीस मा है ॥३५॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीरों का एक नाना जीरों की अपेक्षा जगन्य और उत्कृष्ट काल सामान्य काल समान है ॥३६॥ अमयत सम्यग्दृष्टि जीर नाना जीरों की अपेक्षा सरसाल होते हैं ॥३७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥३८॥ उत्कृष्ट काल कुद्व कम तेतीस मा

॥३६॥ प्रथम पृथ्वी स लेकर, मातवीं पृथ्वी, नर मिथ्या-
दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल होते, है ॥३७॥
एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३८॥ उत्कृष्ट
काल प्रथम एक, तीन, सात, दस, सत्तरह, बाईस और
तीस मास है ॥३९॥ सामान्य और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों
का नाना और एक जीव की अपेक्षा जगन्मय और उत्कृष्ट काल
सामान्य काल के समान है ॥४०॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव
नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल होते है ॥४१॥ एक जीव
की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४२॥ उत्कृष्ट काल
प्रथम, कुछ कम, एक, तीन, सात, दस, सत्तरह, बाईस और
तीस मास है ॥४३॥ त्रिपंच गति में सामान्य त्रिपंचों में
मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
है ॥४४॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त
है ॥४५॥ उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥४६॥
सामान्य और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य
काल के समान है ॥४७॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना
जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते है ॥४८॥ एक जीव की अपेक्षा
जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४९॥ उत्कृष्ट काल तीन पंच
है ॥५०॥ सयतामयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
है ॥५१॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५२॥
उत्कृष्ट काल, कुछ कम, पूरा कोटि वर्ष है ॥५३॥ सामान्य
पंचन्द्रिय त्रिपंच, पंचन्द्रिय त्रिपंच पर्याप्त, और पंचन्द्रिय त्रिपंच

योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व
 काल होते हैं ॥५७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्त-
 र्मुहूर्त है ॥५८॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक
 तीन पल्य है ॥५९॥ साक्षादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का
 काल सामान्य कथन के समान है ॥६०॥ असयत सम्यग्दृष्टि
 जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥६१॥ एक जीव
 की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६२॥ उत्कृष्ट काल क्रम से
 तीन, तीन और बुद्ध क्रम तीन पल्य है ॥६३॥ मयतासयत का
 काल सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ पचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तक
 तिर्यच नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥६५॥ एक
 जीव का अपेक्षा जगन्मय काल भुद्र भय ग्रहण प्रमाण है ॥६६॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६७॥ मनुष्य गति में सामान्य
 मनुष्य, मनुष्यपयस और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि जीव
 नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥६८॥ जगन्मय काल
 अन्तर्मुहूर्त है ॥६९॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथक्त्व वर्ष से
 अधिक तीन पल्य है ॥७०॥ सामान्य जीव नाना जीवों की
 अपेक्षा जगन्मय से एक समय होते हैं ॥७१॥ उत्कृष्ट काल
 अन्तर्मुहूर्त है ७२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल एक
 समय है ॥७३॥ उत्कृष्ट काल छह आयत्ती है ॥७४॥ सम्यग्-
 मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय काल अन्त-
 र्मुहूर्त है ॥७५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७६॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७७॥ उत्कृष्ट काल अन्त

मुहूर्त है ॥७८॥ अस्यत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा
 सर्वकाल होते हैं ॥७९॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल
 अन्तर्मुहूर्त है ॥८०॥ उत्कृष्ट काल क्रम से तीन, तीन से अधिक
 और तीन पल्य से कुछ कम हैं ॥८१॥ सयत्तासयत् से लेकर
 अयोगिकेवली तक उत्कृष्ट वा जयन्त्य काल सामान्य कथन
 के समान हैं ॥८२॥ लज्ज्यपर्याप्त मनुष्या म नाना जीवों
 की अपेक्षा जयन्त्य से शुद्ध भय ग्रहण प्रमाण काल तक होते
 हैं ॥८३॥ उत्कृष्ट काल पल्य का अमल्यातरा भाग है ॥८४॥
 एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल शुद्ध भय ग्रहण प्रमाण
 है ॥८५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥८६॥ देवगति म
 सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा
 सर्वकाल होते हैं ॥८७॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल
 अन्तर्मुहूर्त है ॥८८॥ उत्कृष्ट काल इक्कीस सागर है ॥८९॥
 सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि का काल सामान्य कथन के
 समान है ॥९०॥ अस्यत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की
 अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥९१॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य
 काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९२॥ उत्कृष्ट काल तैत्तीम सागर
 है ॥९३॥ भजनवासी देवों से लेकर सहस्रवार कल्प वासी देवों
 तक मिथ्यादृष्टि और अस्यत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों
 की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥९४॥ एक जीव की अपेक्षा
 जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९५॥ उत्कृष्ट काल क्रम से एक
 सागर एक पल्य, दो, सात, दस, चौदह, सोलह और

सागर से कुछ अधिक है ॥६६॥ सासादन और सम्यग्मिध्यादृष्टि
 देवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥६७॥ आनत-प्राणत
 में लेकर नव गैयक विमान, वासी दसों में मिध्यादृष्टि और
 अभयत सम्यग्दृष्टि देव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते
 हैं ॥६८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥६९॥ उत्कृष्ट काल क्रम से गोम, राईस, तैईस, चौबीस,
 पचीस, छत्तीस, सत्ताईस, अष्टाईस, उन्नीस, तीस और इकतीस
 सागर है ॥१००॥ सासादन और सम्यग्मिध्यादृष्टि देवों का
 काल सामान्य कथन के समान है ॥१०१॥ नव अनुदिश विमान
 रासा दसों तथा अनुत्तर नामक त्रजय, वैजयन्ता, जयन्त और
 अपराजित विमान, वासी दसों में अभयत सम्यग्दृष्टि देव
 नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१०२॥ एक जीव
 की अपेक्षा जघन्य काल कुछ अधिक इक्तीस सागर और चार
 अनुत्तर विमानों में कुछ अधिक, त्रैताम सागर है ॥१०३॥
 उत्कृष्ट काल क्रम से त्रैताम और त्रैताम सागर है ॥१०४॥
 मर्यादमिद्धि विमानवासी दसों में अभयत सम्यग्दृष्टि देव
 नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१०५॥ एक
 जीव की अपेक्षा जघन्य तथा उत्कृष्ट काल त्रैताम सागर
 है ॥१०६॥

इति गतिमार्गशा

इन्द्रिय-मार्गशा से सामान्य एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की
 अपेक्षा सब काल होते हैं ॥१०७॥ एक जीव की अपेक्षा

जन्म काल भुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०८॥ उत्कृष्ट काल
 अनन्त कालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥१०९॥
 सामान्य चादर एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व
 काल होते हैं ॥११०॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल
 भुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१११॥ उत्कृष्ट काल अंगुल प
 असंख्यातरे भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अपेक्षिणी
 अन्तर्निष्ठा प्रमाण है ॥११२॥ चादर एकेन्द्रिय पर्याप्त
 जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११३॥
 एक जीव की अपेक्षा जन्म काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११४॥
 उत्कृष्ट काल सख्यात हजार वर्ष है ॥११५॥ चादर एकेन्द्रिय
 लघु पर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
 हैं ॥११६॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल भुद्र भव ग्रहण
 प्रमाण है ॥११७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११८॥
 सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व
 काल होते हैं ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल भुद्र
 भव ग्रहण प्रमाण है ॥१२०॥ उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक
 के जितने प्रदश है उतने प्रमाण है ॥१२१॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 पर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१२२॥
 एक जीव की अपेक्षा जन्म काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२३॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२४॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय लघु
 पर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१२५॥
 एक जीव की अपेक्षा जन्म काल भुद्र

ग्रहण प्रमाण है ॥१२६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२७॥ सामान्य द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुर्गिन्द्रिय और उ ही के पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होने है ॥१२८॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल भ्रमशः क्षुद्र-भ्रम ग्रहण और अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥१२९॥ उत्कृष्ट-काल प्रख्यात हजार वर्ष है ॥१३०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुर्गिन्द्रिय लब्ध पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१३१॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल क्षुद्र भ्रम ग्रहण प्रमाण है ॥१३२॥ उत्कृष्ट-काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१३३॥ सामान्य पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१३४॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥१३५॥ उत्कृष्ट काल एक हजार, सागर और पूर्व की प्रथमत्व से कुछ अधिक है ॥१३६॥ सासादन, सरोवर अयोनि केवली गुणस्थान तरु के जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥१३७॥ पंचेन्द्रिय लब्ध पर्याप्तक जीवों का काल द्वीन्द्रियादि लब्ध पर्याप्तक जीवों के काल के समान सर्व कथन है ॥१३८॥

इति इन्द्रियमागणा

काय मार्गणा में सामान्य, पृथ्वी, जल, तन और वायु कायिक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१३९॥

है ॥१४०॥ उत्कृष्ट काल अस्तरयात लोक प्रमाण है ॥१४१॥ सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक के वादर-जीव, नाना जीवों की अपेक्षा-सर्व काल हात है ॥१४२॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१४३॥ उत्कृष्ट-काल कर्म स्थिति, प्रमाण है ॥१४४॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक के वादर-पर्याप्त जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल हाते है ॥१४५॥ एक जीव की अपेक्षा, जन्य काल अन्त-मुहूर्त है ॥१४६॥ उत्कृष्ट काल स्तरयात हजार वर्ष है ॥१४७॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक के वादर, लक्ष्यपर्याप्त जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१४८॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल, क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१४९॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१५०॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति और निगोद के सूक्ष्म जीव और उनके ही पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवों का काल सूक्ष्म एवेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्तों के काल के समान है ॥१५१॥ सामान्य वनस्पति, कायिक जीवों का काल एवेन्द्रिय-जीवों के काल के समान है ॥१५२॥ सामान्य निगोद जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१५३॥ एक जीव की अपेक्षा, जन्य काल, क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१५४॥ उत्कृष्ट काल अर्द्ध, पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥१५५॥ वादर निगोद जीवों का काल मान्य

पृथ्वी कायिक जीवों के समान है ॥१५६॥ सामान्य त्रय कायिक और त्रिसंयुक्त पयासनों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१५७॥ एक जीव की अपेक्षा ज्ञान काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१५८॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटी पृथक् से अविज्ञाने हजारे सगिर और पूरे दो हजार सगिर है ॥१५९॥ मामादर से लेकर अयोगि केवली गुण स्थान तक का काल सामान्य कवन के समान है ॥१६०॥ त्रयकायिक त्रिसंयुक्त पयासनों का काल दोडन्द्रियादि लब्ध पयासनों के काल के समान सत्र करने है ॥१६१॥

॥१६२॥ त्रयकायिक त्रिसंयुक्त पयासनों का काल दोडन्द्रियादि लब्ध पयासनों के काल के समान सत्र करने है ॥१६३॥

यौग भाग्यला से मय मनोयोगी और सर्व वचन योगी जीवों में मिथ्यादृष्टि, असयत सम्यग्दृष्टि, सयतामयत, प्रमत्त, अप्रमत्त और संपादि केवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६२॥ एक जीव की अपेक्षा ज्ञान काल एक समय है ॥१६३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६४॥ मासादर का काल सामान्य कवन के समान है ॥१६५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा एक समय होते हैं ॥१६६॥ उत्कृष्ट काल प्रत्येक अमरस्यातरे भाग है ॥१६७॥ एक जीव की अपेक्षा ज्ञान काल एक समय है ॥१६८॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६९॥ चारों उपगमर और संप्रक, जीव नाना जीवों की अपेक्षा ज्ञान काल एक समय होता है ॥१७०॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७१॥ एक जीव की अपेक्षा

एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६१॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६२॥ संयोगिनी जीने नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय होते है ॥१६३॥
 उत्कृष्ट काल सरुपात समय है ॥१६४॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मय और उत्कृष्ट काल एक समय है ॥१६५॥ वैश्वदेव
 काययोगियों में मिथ्यादृष्ट और अमयतमम्यगदृष्ट जीव नाना
 जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥१६६॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मय काल एक समय है ॥१६७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥१६८॥ साक्षात्कृत जीवों का काल सामान्य परा के समान
 है ॥१६९॥ मय्यग्निध्यादृष्ट जीवों का काल मनोयोगियों
 के समान है ॥१७०॥ वैश्वदेव मिथ्या काययोगी जीवों में
 मिथ्यादृष्ट और असंयत मय्यगदृष्ट जीव नाना जीवों की
 अपेक्षा जगन्मय से अन्तर्मुहूर्त काल तक होते है ॥१७१॥
 उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१७२॥ एक
 जीव की अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७३॥ उत्कृष्ट
 काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७४॥ साक्षात्कृत जीवों का काल नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥१७५॥ उत्कृष्ट
 काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१७६॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय काल एक समय है ॥१७७॥ उत्कृष्ट काल
 एक समय के समान आती प्रमाण है ॥१७८॥ आहारक
 काययोगियों में प्रमत्त मयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा
 जगन्मय से एक समय होते है ॥१७९॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्

मुहूर्त है ॥२१०॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल एक
 समय है ॥२११॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१२॥
 आहारकमिश्र काययोगियों में प्रसन्न मनो जीव नाना जीवों
 की अपेक्षा जगन्मय से अन्तर्मुहूर्त काल तक होते हैं ॥२१३॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१४॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२१६॥ कर्मणः काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना
 जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२१७॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय काल एक समय है ॥२१८॥ उत्कृष्ट काल तीन
 समय है ॥२१९॥ सासादन और असयत्त सम्यग्दृष्टि जीव नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय तक होते हैं ॥२२०॥
 उत्कृष्ट काल आवली के असख्यातों भाग हैं ॥२२१॥ एक जीव
 की अपेक्षा जगन्मय काल एक समय है ॥२२२॥ उत्कृष्ट काल दो
 समय है ॥२२३॥ स्यागिकेवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा
 जगन्मय से तीन समय तक होते हैं ॥२२४॥ उत्कृष्ट काल सयत्त
 समय है ॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय और उत्कृष्ट
 काल तीन समय है ॥२२६॥
 अति योगमार्गणाः ॥२२७॥
 योगमार्गणाः से स्त्री पदियाँ में मिथ्यादृष्टि जीव नाना
 जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२२७॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२२८॥ उत्कृष्ट काल
 पत्यु शत पृथक्त्व है ॥२२९॥ सासादन जीवों का काल

सामान्य कथन के समान है ॥२३०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों
 का काल सामान्य कथन के समान है ॥२३१॥ असयत
 सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत
 है ॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२३३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पचपन पत्य है ॥२३४॥
 मयता मयत, स लेकर अनित्यचिररुण गुणस्थान तरु के जीवों
 का काल सामान्य कथन के समान है ॥२३५॥ पुष्प वैदियों
 में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत
 है ॥२३६॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२३७॥ उत्कृष्ट काल सागर शत पृथक् है ॥२३८॥
 मासादन स लेकर अनित्यचिररुण गुणस्थान तरु प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों का काल सामान्य कथन के समान
 है ॥२३९॥ नपुमक वैदियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों
 की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२४०॥ एक जीव की अपेक्षा
 जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२४१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्
 तमक अमर्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥२४२॥ सामादन
 जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४३॥ सम्यग्
 मिथ्यादृष्टि का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४४॥
 असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत
 है ॥२४५॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२४६॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर है ॥२४७॥
 मयता मयत, स लेकर अनित्यचिररुण गुणस्थान तरु फ

काल सामान्य कथन के समान है ॥२४८॥ अगस्त वेदी जीवों में अनित्यत्तिरुण के अवद भाग ॥ लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४९॥

इति वेदमागणा

कपाय मार्गणा से क्रोधरूपायी, मानरूपायी, मायाकपायी और लाभकपायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अश्रमत्त गुणस्थान तक का काल, मनोयोगियों के समान है ॥२५०॥ क्रोध, मान और माया इन तीनों कपायों की अपेक्षा आठवें और नवें गुणस्थानवर्ती और लोभ कपाय की अपेक्षा आठवें, नवें और दशवें गुणस्थानवर्ती उग्रामर जीव नाना जीवों की अपेक्षा जन्य स एक समय तक होता है ॥२५१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५२॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५४॥ अपूर्णकरण और अनित्यत्तिरुण ये दो गुणस्थानवर्ती क्षपक तथा अपूर्णकरण अनित्यत्तिरुण और सूक्ष्म सापराय ये तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक नाना जीवों की अपेक्षा जन्य स अन्तर्मुहूर्त तक होता है ॥२५५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५६॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५८॥ अरूपायी जीवों में अन्तिम चतुर्गुणस्थानी जीव का काल सामान्य कथन के समान है ॥२५९॥

इति कपायमार्गणा

ज्ञान मार्गणा से कृमति और कुश्रुत ज्ञानियों म, मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६०॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६१॥ विभक्तज्ञानियों म मिथ्यादृष्टि जीवों नाना जीवों की अपेक्षा मर काल होते है ॥२६२॥ एक जीव की अपेक्षा अयन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२६३॥ खलुष्ट काल कुछ कम तत्तीस सागर है ॥२६४॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६५॥ मतिश्रुत और अधिनाली जीवों म अस यत से लेकर क्षीण कपाय गुणस्यान तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६६॥ मनुष्य ज्ञानियों म प्रमत्त सयत म लेकर क्षीण कपाय गुणस्यान तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६७॥ कैवल ज्ञानियों मे सयोगिनेयली और अयोगिनेयली जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६८॥

इति ज्ञानमार्गणा

मध्यम मार्गणा से सामान्य सयतों म प्रमत्त सयत से लेकर अयोगिनेयली तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६९॥ सामायिक और उत्प्रेष्यापना म प्रमत्त गुणस्यान से लेकर अनित्यत्तिकरण तक के जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७०॥ परिहागमिशुद्धि मे प्रमत्त और अप्रमत्त का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७१॥ सूक्ष्म साम्यरायिक में उपशमन और क्षपणों का काल सामान्य

कथन के समान है ॥२७३॥ यथा ख्याते मे अन्तिमे चार
गुणस्थान वाले जीवों का काल सामान्य कथन के समान
है ॥२७३॥ मयतामयता का फल सामान्य कथन के समान
है ॥२७४॥ असयत जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत
गुणस्थान तक असयतों का फल सामान्य कथन के समान
है ॥२७५॥

इति संयममार्गिणा
दर्शनमार्गणा स चक्षुदर्शनी जीवा मे मिथ्यादृष्टि जीव नाना
जीवों की अपेक्षा सर्व काल होने है ॥२७६॥ एक जीव
की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२७७॥ उत्कृष्ट काल
दा हजार मास है ॥२७८॥ सामान्य से लेकर क्षीणरूपाय
गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७९॥
अचक्षुदर्शनी में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान
तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२८०॥ अधि-
दर्शनी जीवों का काल अधिधानियों के समान है ॥२८१॥
केवल दर्शनी जातों का काल केवल जानियों के समान
है ॥२८२॥

इति नवमार्गिणा
लेखा मार्गणा से कृष्ण, नील और सफेद रेश्या गति
जातों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जातों की अपेक्षा सर्व काल
हान है ॥२८३॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्त-
मुहूर्त है ॥२८४॥ उत्कृष्ट काल क्रमशः तृतीयांश, मत्तर्ह

मागर और मात सागर से कुछ अधिक है ॥२८५॥ सासादन जीवों का काल सामान्य - कयन के समान है ॥२८६॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य, कयन के समान है ॥२८७॥ अमयत सम्यग्दृष्टि जीव, नाना जीवों की अपेक्षा "सर्व काल" होता है ॥२८८॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२८९॥ उत्कृष्ट काल तृतीस सागर, सत्तरह मागर और सात सागर से कुछ कम है ॥२९०॥ तेज और पद्मलेखा वालों में मिथ्यादृष्टि और अमयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९१॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९२॥ उत्कृष्ट काल दो सागर और अठारह मागर से कुछ अधिक है ॥२९३॥ मामादन जीवों का काल सामान्य - कयन के समान है ॥२९४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कयन के समान है ॥२९५॥ मयतामयत, ममत्त और अममत्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९६॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त काल एक समय है ॥२९७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९८॥ शुक्ल लेख्या में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होता है ॥२९९॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३००॥ उत्कृष्ट काल कुछ अधिक, तृतीस सागर है ॥३०१॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कयन के समान है ॥३०२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कयन के समान है ॥३०३॥

दृष्टः जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३०४॥
मयतामयत, प्रमत्त और अप्रमत्त जीव माना जीवों की अपेक्षा
सर्व काल होने हैं ॥३०५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय काल
एक ममय है ॥३०६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३०७॥
चारों उपशमक चारों संपके और मयोगिनेयली का काल
सामान्य कथन के समान है ॥३०८॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्य मार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों
की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३०९॥ एक जीव की अपेक्षा
अनादि मान्त और मादि मान्त काल है ॥३१०॥ उम
में से मादि मान्त का कथन इस प्रकार है ॥३११॥ जगन्मय
काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३१२॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्थ पुद्गल
परिवर्तन है ॥३१३॥ सासादन में लेकर अयोगिनेयली
गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥३१४॥
अभव्य जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होने
हैं ॥३१५॥ एक जीव की अपेक्षा अनादि और अनन्त काल
है ॥३१६॥

इति मयमार्गणा

सम्यक्त्व मार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टि और शायक सम्यग्-
दृष्टियों में असयत से लेकर अयोगिनेयली गुणस्थान तक का
काल सामान्यकथन के समान है ॥३१७॥ वेदक सम्यग्दृष्टियों में
असयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का काल सामान्य-

वरुन के समान है ॥३१८॥ उगुन सम्यग्दृष्टि जीवों में असंयत
 सम्यग्दृष्टि और असंयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा जन्य
 स अन्तर्मुहूर्त काल तक होते हैं ॥३१९॥ उत्कृष्ट काल पत्य
 क अमर्यादों भाग है ॥३२०॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य
 काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥
 प्रमत्त म गरर उपजान्त कपाय गुणस्थान के जीव नाना
 जीवों की अपेक्षा जन्य स पत्र समय तक होते हैं ॥३२३॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२४॥ एक जीव की अपेक्षा
 जन्य काल एक समय है ॥३२५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥३२६॥ सामादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान
 है ॥३२७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के
 समान है ॥३२८॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन
 के समान है ॥३२९॥

इति सम्यक्त्व मागणा

सैनी मार्गणा से सैनी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों
 की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३०॥ एक जीव की अपेक्षा
 जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३३१॥ उत्कृष्ट काल सामा
 शत पृथक्त्व है ॥३३२॥ सामादन स तमर क्षीण कपाय
 गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान
 है ॥३३३॥ असैनी जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल
 होते हैं ॥३३४॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल सुद
 भय ग्रहण प्रमाण है ॥३३५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त काल

तत्र अमरुपान पुद्गल पर्वितन प्रमाण ३ ॥३३६॥

इति सैनीमागणा

आहार मार्गणा से आहारकों म मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३७॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३३८॥ उत्कृष्ट काल अगुल के असरयातवें भाग प्रमाण असरयातामल्यात अपमर्षिणी और उत्सर्षिणी है ॥३३९॥ सासादन से लेकर सयोगिनेयली गुणगान तक के आहारकों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३४०॥ अनाहारक जीवों का काल कार्माण काय-यागियों के समान है ॥३४१॥ अयोगिनेयली का काल सामान्य कथन के समान है ॥३४२॥

इति आहारमार्गणा

इति कालाधिकार

अथ अन्तराधिकार

— ०४ —

अतः कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार हैं ॥१॥ सामान्य के मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निगन्तर है ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो छयासठ सागर हैं ॥४॥ सामादन और मम्य-

मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य
 स एक समय है ॥५॥ उत्कृष्ट अन्तर पंच के असख्यातवें
 भाग है ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रमज
 पन्च के असख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥७॥ उत्कृष्ट
 अन्तर कुछ कम अर्थ पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८॥ असयत
 स लेकर अप्रमत्त गुणस्वान नरु के प्रत्येक गुणस्वानर्था
 जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है निगन्तर
 है ॥९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त
 है ॥१०॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्थ पुद्गल परि-
 वर्तन प्रमाण है ॥११॥ चारों उपशमनों का अन्तर
 नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य दो एक समय है ॥१२॥
 उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक् है ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा
 जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम
 अर्थ पुद्गल परिवर्तन काल है ॥१५॥ चारों क्षपक और
 अयागि केवली का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य स
 एक समय है ॥१६॥ उत्कृष्ट अन्तर उह मास है ॥१७॥
 एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निगन्तर है ॥१८॥
 सयोगि केवलियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं
 है, निगन्तर है ॥१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं
 है, निगन्तर है ॥२०॥

इति माम यस्या

गति मार्गणा म नरक गति में सामान्य नास्तियों म मिथ्या

दृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२१॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२२॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२३॥ सामादन और सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंयतातरे भाग है ॥२५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर पल्य का असंयतातरे भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२७॥ प्रथम पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक के नारकियों में मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२८॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२९॥ उत्कृष्ट अन्तर एक, तीन, सात, दश, सत्तर, बाईस, और तेतीस सागर से कुछ कम है ॥३०॥ सामादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥३१॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंयतातरे भाग है ॥३२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर क्रमशः पल्य का असंयतातरे भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३३॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः एक, तीन, सात, दश, सत्तर, बाईस और तेतीस सागर से कुछ कम है ॥३४॥ त्रियंभुवनि में सामान्य त्रियंभुवनि में मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर ॥३५॥

एक जीव की अपेक्षा जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६॥
 उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य है ॥३७॥ सासादन स
 लेखर-सयतासयत गुणस्थान तब का अन्तर सामान्य कथन
 के समान है ॥३८॥ सामान्य पचेन्द्रिय त्रियंच, पचेन्द्रिय
 त्रियंच पर्याप्त और पचेन्द्रिय त्रियंच योनिमत्तियों-म मिथ्या,
 दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥३९॥ एक जीव का अपेक्षा जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥४०॥
 उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है ॥४१॥ सामादन
 और सम्यग्मिथ्यादृष्टिया का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जगत् स एक समय है ॥४२॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के अम-
 ल्यान्तरे भाग प्रमाण है ॥४३॥ एक जीव की अपेक्षा जगत्
 अन्तर क्रम से पल्य क असरुशतवे भाग और अन्तर्मुहूर्त
 है ॥४४॥ उत्कृष्ट पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य
 है ॥४५॥ असयत सम्यग्दृष्टि का नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥४६॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥४७॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व कोटि
 पृथक्त्व का अविन, तीन पल्य है ॥४८॥ सयतासयत का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥४९॥
 एक जीव की अपेक्षा जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥५०॥
 उत्कृष्ट अन्तर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥५१॥ पचेन्द्रिय
 त्रियंच लव्यपर्याप्तों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर
 नहीं है, निरन्तर है ॥५२॥ एक जीव की अपेक्षा जगत् अन्तर

क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥५३॥ उत्कृष्ट अंतर अनंत काल
 प्रमाण अमर्याद पुद्गल परिवर्तन है ॥५४॥ यह अंतर गति
 की अपेक्षा रहा गया है ॥५५॥ गुणस्यान की अपेक्षा जगन्मय
 और, उत्कृष्ट, इन दोनों प्रकार से अंतर नहीं है, निरंतर
 है ॥५६॥ मनुष्य गति में मामान्य मनुष्य, मनुष्य पक्षाक्षर और
 मनुष्यनियों - में मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की
 अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥५७॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगत् अतर्मुहूर्त है ॥५८॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य
 है ॥५९॥ मामान्य और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥६०॥ उत्कृष्ट
 अंतर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मय अंतर क्रम से पल्य का असंख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त
 है ॥६२॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तान
 पल्य है ॥६३॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥६४॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय अंतर अतर्मुहूर्त है ॥६५॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व
 कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥६६॥ सयता-
 सयतों में लेकर, अममत्त तन नाना जीवों की अपेक्षा अंतर
 नहीं है, निरंतर है ॥६७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अंतर
 अतर्मुहूर्त है ॥६८॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥६९॥
 चारों उमशमकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय
 से एक समय है ॥७०॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष - ॥७१॥

एक जात की अपेक्षा जन्म अथ अतर्मुहूर्त है ॥७२॥ उत्कृष्ट
 अथ पूर कोटि पृथक्त्व है ॥७३॥ चारों क्षेपक और अयोगि
 स्वतंत्रों की अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जन्म से एक
 समय है ॥७४॥ उत्कृष्ट अथ छह मास और वर्ष पृथक्त्व
 है ॥७५॥ एक जात की अपेक्षा अथ नहीं है, निरतर
 है ॥७६॥ मयोगि केरली का अथ सामान्य जन्म के समान
 है ॥७७॥ मनुष्य लब्ध पर्याप्तता का अथ नाना जीवों की
 अपेक्षा जन्म से एक समय है ॥७८॥ उत्कृष्ट अथ पल्य के
 अथयातवा भाग है ॥७९॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म अथ
 भुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥८०॥ उत्कृष्ट अथ अनन्त-
 कालात्मक असख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८१॥
 यह अथ गति की अपेक्षा कहा है ॥८२॥ गुणस्थान की
 अपेक्षा तो दोनों प्रकार से भी अथ नहीं है, निरतर
 है ॥८३॥ द्रव गति में सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि और
 असयत मय्यदृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अंतर नहीं है, निरतर है ॥८४॥ एक जीव की अपेक्षा जन्म
 अथ अतर्मुहूर्त है ॥८५॥ उत्कृष्ट अथ कुछ कम इक्कीस
 भाग है ॥८६॥ मासादन और मय्यग्निमिथ्यादृष्टि देवों का
 नाना जीवों की अपेक्षा जन्म अन्तर एक समय है ॥८७॥
 उत्कृष्ट अथ पल्य का अथयातवा भाग है ॥८८॥ एक
 जीव की अपेक्षा जन्म अथ क्रम से पल्य का अथयातवा
 भाग और अतर्मुहूर्त है ॥८९॥ उत्कृष्ट अथ कुछ कम इक्कीस

तीस माग है ॥६०॥ भवनगामी, स लेकर सहस्रार तक मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरतर है ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अतर्मुहूर्त है ॥६२॥ उत्कृष्ट अंतर क्रम से एक सागर, एक पल्ल और दूठ अधिक दो, सात, दश, चौदह, मोलह और अद्वारह सागर है ॥६३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का अंतर स्वस्थान सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ आनत कथन में लेकर नयग्रैयेक विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि और असयत-सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरतर है ॥६५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर-अतर्मुहूर्त-है ॥६६॥ उत्कृष्ट अंतर क्रम से कुछ कम बीस, धाईस, तेईस चौबीस, पन्चीस, छत्तीस, सत्ताईस, अष्टाईस, उनतीस, तीस और इकतीस सागर है ॥६७॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का अंतर स्वस्थान सामान्य कथन के समान है ॥६८॥ अनुदिग को आदि लेकर सर्वोर्ध्व मिडि विमान, धामी देवों में असयत सम्यग्दृष्टि देवों का अंतर नहीं है, निरतर है ॥६९॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरतर है ॥१००॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा में सामान्य एकेन्द्रियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरतर है ॥१०१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०२॥ उत्कृष्ट

अतः पूर्ण कोटि पृथक्त्वं से अधिक दो हजार मांस
 है ॥१०३॥ सामान्य वादर एकेन्द्रियों का नाना जीवों की
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१०४॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय अतः शुद्ध भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०५॥ उत्कृष्ट
 अन्तर असंख्यात लोक प्रमाण है ॥१०६॥ इसी प्रकार से वादर
 एकेन्द्रियलोक पर्याप्तिक और वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तियों का अन्तर
 जानना चाहिये ॥१०७॥ सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय
 पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय लयपर्याप्त जीवों का अन्तर
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१०८॥
 एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अतः शुद्ध भव ग्रहण प्रमाण
 है ॥१०९॥ उत्कृष्ट अन्तर अङ्गुल के असंख्यातों भाग असं-
 ख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अस्मर्पिणी काल प्रमाण
 है ॥११०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और उन्हीं के
 पर्याप्तक तथा लयपर्याप्तक जीवों का नाना जीवों की
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१११॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्मय अतः शुद्ध भव ग्रहण प्रमाण है ॥११२॥
 उत्कृष्ट अन्तर अनन्त कालात्मक अमर्याद पुद्गल पर्यन्त
 है ॥११३॥ सामान्य पंचन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों
 मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान
 है ॥११४॥ सामादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर
 नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥११५॥
 उत्कृष्ट अन्तर पदों के असंख्यातों भाग है ॥११६॥

एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रम से पल्य के असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥११७॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक एक हजार सागर है, तथा सागर शत पृथक्त्व है ॥११८॥ असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१२०॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि प्रथक्त्व से अधिक सहस्र सागर और शत पृथक्त्व सागर है ॥१२१॥ चारों उग्रशामकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१२२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥१२३॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक सागर सहस्र और सागरशत पृथक्त्व है ॥१२४॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१२५॥ सयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१२६॥ पचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तकों का अन्तर । द्वीन्द्रियादि लब्धपर्याप्तकों के समान सर्व कथन है ॥१२७॥ यह गति की अपेक्षा अन्तर कहा है ॥१२८॥ गुणस्थान की अपेक्षा दोनों ही प्रकार से अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१२९॥

इति इन्द्रियमार्गणा ।

कायमार्गणा स पृथ्वी, जल, तेज, वायु, के बादर और सूक्ष्म तथा उन मयके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ॥ जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरन्तर है ॥१३०॥ एक जीव

की, अपेक्षा जगन्मय अन्तर-धुद्रभग्न ग्रहण प्रमाण है ॥१३१॥
 उत्कृष्ट अन्तर जनकालात्मक असरयात धुद्रगल परिवर्तन है
 ॥१३२॥ अनसृष्टिवायिक, निगाह, नीच, ज्ञानके चान्द्र, व। मूक्ष्म
 तथा उन ५२के पर्याप्तक, और अपेक्षा १३जीवों का नाना
 जीवों की अपेक्षा अन्तर निर्वाह है, निरंतर ॥१३३॥ एक जीव
 की अपेक्षा जगन्मय अन्तर धुद्रभग्न ग्रहण प्रमाण है ॥१३४॥ उत्कृष्ट
 अन्तर, असरयात लोक, है ॥१३५॥ आदर-अनसृष्टिवायिक
 प्रत्येक धारि और, जनके पर्याप्तक तथा, अपेक्षा १३जीवों का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥१३६॥ एक
 जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर धुद्रभग्न ग्रहण प्रमाण है ॥१३७॥
 उत्कृष्ट अन्तर दाई धुद्रगल परिवर्तन प्रमाण है ॥१३८॥ सामान्य
 नमरायिक आदि नमरायिक पर्याप्तक जीवों-म मिथ्यादृष्टि
 जीवों का, अन्तर समान्य कथन, है प्रमाण है ॥१३९॥ सामान्य
 और, सम्ममिथ्यादृष्टि, जीवों का अन्तर नाना, ज्ञानों की
 अपेक्षा, सामान्य करण, है प्रमाण है ॥१४०॥ एक
 जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर-क्रम, है, है असरयात
 भाग और अन्तमुहूर्त, है ॥१४१॥ उत्कृष्ट अन्तर निर्वाह पूर्ण
 नाटि पृथक् से अधिक दो हजार मात्र और कुछ कम दो
 हजार मात्र है ॥१४२॥ अमंयत से लेकर अममत्तनयत गुणस्थान
 तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर, नहीं है,
 निरंतर है ॥१४३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्त
 मुहूर्त है ॥१४४॥ उत्कृष्ट अन्तर, पूर्ण नाटि पृथक् से अधिक

दो सहस्र भागों और कुछ कम दो सहस्र भागों है ॥१४३॥ चारों उपशमों का अन्तर् नाना जीवों की अपेक्षा मामान्य रथन के समान है ॥१४६॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर् अन्तर्मुहूर्त है ॥१४७॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्वोक्ति पृथक् से अधिक दो सहस्र भाग तथा कुछ कम दो सहस्र भाग है ॥१४८॥ चारों क्षण और अयोगिफेरली का अन्तर् मामान्य रथन के समान है ॥१४९॥ संयोगिफेरली का अन्तर् सामान्य रथन के समान है ॥१५०॥ त्रयशायिक लक्षणार्थों का अन्तर् दोदन्द्रियादि त्रयशायिकों के समान सर्व कथन है ॥१५१॥ यह अन्तर कायकी अपेक्षा कहा है ॥ गुणस्थान की अपेक्षा दोनों ही प्रकार से अन्तर निर्दोष है, निरन्तर है ॥१५२॥

इति शायमागंगा

योग मार्गणा में मर्म मनोयोगी, सर्व रचनयोगी, मामान्य शाययोगी और औदारिक काययोगियों में, निष्प्रादृष्टि, असंयत सम्यग्ज्ञि संयत्तामयत, प्रमत्त, अप्रमत्त और मयोगिफेरलियों का नाना जीवों की और एक जीव की अपेक्षा अन्तर् नहीं है, निरन्तर है ॥१५३॥ सामादन और सम्यग्निष्प्रादृष्टियों का अन्तर् नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय सा एक भव्य है ॥१५४॥ उत्कृष्ट अन्तर पत्य के समानांतर भाग है ॥१५५॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर् नहीं है, निरन्तर है ॥१५६॥ चारों उपशमों का अन्तर्

नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१५७॥
 एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५८॥
 चारों क्षणों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥१५९॥
 आदित्यमिश्र - काययोगियों में, मिथ्यादृष्टि - जीवों का
 नाना जीवों और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥१६०॥ सामादन का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 सामान्य कथन के समान है ॥१६१॥ एक जीव की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६२॥ असयत्तमस्यग्दृष्टियों
 का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जयन्त्य से एक समय
 है ॥१६३॥ उत्कृष्ट अन्तर र्पपृथक्त्व ममाण है ॥१६४॥
 एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६५॥
 सयोगिनेत्रली जिनों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जयन्त्य से एक समय है ॥१६६॥ उत्कृष्ट अन्तर र्प पृथक्त्व
 है ॥१६७॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥१६८॥ वैव्रियकराययोगियों में, आदि के चारों गुण
 स्थानरती जीवों का अन्तर मनोयोगियों के समान है
 ॥१६९॥ वैक्रियकर्मिभ्र, काययोगियों में, मिथ्यादृष्टियों का
 अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जयन्त्य से एक समय
 है, ॥१७०॥ उत्कृष्ट अन्तर - वारह, मुहूर्त है ॥१७१॥
 एक जीव की अपेक्षा - अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७२॥
 सामादन और असयत्तमस्यग्दृष्टि जीवों का अन्तर आदित्य-
 मिश्र काययोगियों के समान है ॥१७३॥ आहारककाययोगी

और आहारकमिथकाययोगियों में उत्कृष्ट अन्तर
 नाना जीवों की अपेक्षा जलजन्म के उत्कृष्ट अन्तर ॥१८१॥
 उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥१८२॥ उत्कृष्ट अन्तर
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१८३॥ उत्कृष्ट अन्तर
 मिथ्यादृष्टि, सासादन, असयत सम्बन्धों के अन्तरों में
 का अन्तर आदारिकमिथ कापेक्षा उत्कृष्ट अन्तर है ॥१८४॥
 इति योऽन्तरः

वर्ग मार्गणा से स्त्रीवेदियों में उत्कृष्ट अन्तर जीवों का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर उत्कृष्ट अन्तर है ॥१८५॥
 एक जीव की अपेक्षा जलजन्म के उत्कृष्ट अन्तर है ॥१८६॥
 उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम उत्कृष्ट अन्तर है ॥१८७॥ मासादन
 और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के अन्तरों में नाना जीवों की
 अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१८८॥ एक जीव की अपेक्षा
 जलजन्म अन्तर क्रमशः पन्ध्र अन्तर उत्कृष्ट अन्तर भाग और
 सुहृत् है ॥१८९॥ उत्कृष्ट अन्तर उत्कृष्ट अन्तर और शत अन्तर
 है ॥१९०॥ असयत से उत्कृष्ट अन्तर गुणस्थान उत्कृष्ट
 गुणस्थानवर्ती जीवों का उत्कृष्ट अन्तर अपेक्षा अन्तर
 निरन्तर है ॥१९१॥ एक जीव की अपेक्षा जलजन्म उत्कृष्ट अन्तर
 सुहृत् है ॥१९२॥ उत्कृष्ट अन्तर उत्कृष्ट अन्तर पृथक्त्व नाना
 अपूर्वकरण और अन्तर उत्कृष्ट अन्तर उत्कृष्ट अन्तर
 जीवों की अपेक्षा जलजन्म उत्कृष्ट अन्तर उत्कृष्ट अन्तर
 के समान है ॥१९३॥ उत्कृष्ट अन्तर उत्कृष्ट अन्तर
 जीवों की

अन्तर अन्तर्मुहूर्त - ॥१८८॥ उत्कृष्ट अन्तर अल्प शत पृथक्त्व-
 है ॥१८९॥ अपूर्वकरण और अनिरुत्तिकरण, सपर्यो, का
 अन्तर जाना जीमों की अपेक्षा जगत् स एक समय है ॥१९०॥
 उत्कृष्ट अन्तर उप पृथक्त्व है ॥१९१॥ एक जीमों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९२॥ पुरुष रेण्डियों में मिथ्या-
 रेण्डियों का अन्तर मामान्य, कथन के समान ॥१९३॥ मासान्त
 और मन्मथमिथ्यादृष्टियों का अन्तर, नाना जीमों की अपेक्षा
 जगत् स एक समय है ॥१९४॥ इन्द्र अन्तर अल्प का अस-
 र्यातवा, भाग है ॥१९५॥ मासादन- और मन्मथमिथ्यादृष्टि-
 जीमों का एक जात की अपेक्षा जगत् अन्तर नमश' अल्प
 का असर्यातवा- भाग अन्तर्मुहूर्त है ॥१९६॥ उत्कृष्ट अन्तर-
 माग शत- पृथक्त्व है ॥१९७॥ अमयत' स' लोका, अमयत'
 गुणम्यास, तत्र, का, नाना जीमों की अपेक्षा अन्तर
 नहीं है, निरन्तर है ॥१९८॥ जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१९९॥
 उत्कृष्ट अन्तर माग शत पृथक्त्व है ॥२००॥ अपूर्वकरण
 और अनिरुत्तिकरण, उपजमकों का अन्तर नाना जीमों की
 अपेक्षा मामान्य, कथन के, समान है ॥२०१॥ एक जीमों
 का अपेक्षा जगत् अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२०२॥ उत्कृष्ट अन्तर
 माग शत, पृथक्त्व है ॥२०३॥ अपूर्वकरण और
 अनिरुत्तिकरण सपर्यो का अन्तर नाना जीमों की अपेक्षा जगत्
 स एक समय है ॥२०४॥ उत्कृष्ट अन्तर अल्प, अधिक एक
 पृथक् है ॥२०५॥ एक जीमों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर

है ॥२०६॥ नपुंसक वेदियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥२०७॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२०८॥ उत्कृष्ट अन्तर कुब्ज किम ततमि सागर है ॥२०९॥
 सामान्य से लेकर अतिवृत्तिपर्यन्त उपगमन गुणस्थान
 तक की अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२१०॥
 अपूर्णरूपों में अनेकवृत्तिकरण, क्षणों का अन्तर नाना
 भासों की अपेक्षा जयन्त्य संपन्न समय है ॥२११॥
 उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥२१२॥ एक जीव की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२१३॥ अपूर्णत वेदियों में अनट्टरि
 कारण और सूक्ष्म सागराय उपगमका का अन्तर नाना जीवों
 की अपेक्षा जयन्त्य से एक समय है ॥२१४॥ उत्कृष्ट अन्तर
 वर्ष पृथक्त्व है ॥२१५॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य अन्तर
 अन्तर्मुहूर्त है ॥२१६॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२१७॥
 उपशान्तीरूपाय वाला का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जयन्त्य से एक समय है ॥२१८॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व
 है ॥२१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥२२०॥ अतिवृत्तिकरण संपन्न, सूक्ष्मसागराय संपन्न,
 क्षीणरूपाय और त्रयोमिकेयली जीवों का अन्तर सामान्य
 कथन के समान है ॥२२१॥ त्रयोमिकेयली का अन्तर
 सामान्य कथन के समान है ॥२२२॥

कपायमार्गणा से क्रोधरूपायी, मानरूपायी, मायारूपायी और लोभरूपाइयों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सूक्ष्म साधारण, उपशमक और क्षणिक तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का अंतर मनोयोगियों के समान है ॥२२३॥ अकपायियों में उपशान्त कपाय का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय है ॥२२४॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२२६॥ अरूपायी जीवों में भाणकपाय और अयोगिस्त्रेवली जिनों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२२७॥ सयोगिस्त्रेवली जिनों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२२८॥

मति कपायमार्गणा ॥ २२९ ॥

ज्ञानमार्गणा में मृत्युज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभगज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का नाना-जावों की और एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२२९॥ सासादन का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२३०॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३१॥ मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान और अवधिज्ञान वालों में समयतसम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३३॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटि है ॥२३४॥ मयतासयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्त-

मुहूर्त है ॥२३६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुल अग्नि छयामठ सागर
 है ॥२३७॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२३८॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३९॥ उत्कृष्ट अन्तर कुल
 अग्नि तृतीय भाग है ॥२४०॥ चारों उपशमकों का अन्तर
 नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मन्तर से एक समय है ॥२४१॥
 उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥२४२॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४३॥ उत्कृष्ट अन्तर कुल अग्नि
 छयामठ सागर है ॥२४४॥ चारों क्षणों का अन्तर सामान्य
 जगन्मन्तर है । विशेष जान यह है कि अग्निमानियों में
 क्षणों का अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥२४५॥ मन, पर्ययमानियों में
 प्रमत्त और अप्रमत्त-सयतों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२४६॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगन्मन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४७॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त
 है ॥२४८॥ चारों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की
 अपेक्षा जगन्मन्तर से एक समय है ॥२४९॥ उत्कृष्ट अन्तर
 वर्षपृथक्त्व है ॥२५०॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मन्तर
 अन्तर्मुहूर्त है ॥२५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुल कम पूर कोटी है
 ॥२५२॥ चारों क्षणों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जगन्मन्तर से एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व
 है ॥२५४॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है
 ॥२५५॥ केवलज्ञानी जीव में मयोमिनेयली का अन्तर सामान्य

न्य कथन के समान है ॥२५६॥ अयोगिस्त्रेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२५७॥

इति ज्ञानमागच्छा

मयम मार्गणा से सामान्य सयतों में प्रमत्त से लेकर उपजान्त-
कपाय तब के सयतों का अन्तर मन पर्यय ज्ञानियों के समान
है ॥२५८॥ चारों क्षपण और अयोगिस्त्रेवली सयतों का अंतर
सामान्य कथन के समान है ॥२५९॥ मयागिस्त्रेवली सयतों का
अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२६०॥ सामायिक और
उदोपन्नापना में प्रमत्त तथा अप्रमत्त का नाना जीवों
की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२६१॥ एक जीव की
अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२६२॥ उत्कृष्ट अन्तर
अन्तर्मुहूर्त है ॥२६३॥ दोनों उपजमनों का अंतर नाना जीवों
की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२६४॥ उत्कृष्ट अन्तर
वर्षपृथक्त्व है ॥२६५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर
अन्तर्मुहूर्त है ॥२६६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व कोटी है
॥२६७॥ दोनों क्षपणों का नाना और एक जीव की अपेक्षा
जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर सामान्य कथन के समान
है ॥२६८॥ पहिहार शुद्धि में प्रमत्त और अप्रमत्त का
नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२६९॥
एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७०॥
उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७१॥ मूदय सापरायण में
मूदय सापरायण उद्यमकों का अन्तर नाना जीवों की

अपेक्षा जगत् से एक समय है ॥२७२॥ उत्कृष्ट अतः वर्ष
 पृथक्त्व है ॥२७३॥ एक जीव की अपेक्षा अतः नहीं है,
 निरतर है ॥२७४॥ क्षयों का अतः सामान्य कथन के समान
 है ॥२७५॥ यथाग्यात सयतों में चारों गुणस्थानों का अतः
 अपेक्षा जीवों के समान है ॥२७६॥ मयतासयतों का
 नाना जीवों की अपेक्षा अतः नहीं है, निरतर है ॥२७७॥
 असयतों में मिथ्यादृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अतः नहीं है, निरतर है ॥२७८॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगत् अतः अन्तर्मुहूर्त है ॥२७९॥ उत्कृष्ट अतः कुछ कम
 तृतीय सागर है ॥२८०॥ मासादन मय्यग्निमिथ्यादृष्टि और
 असयत मय्यदृष्टि जीवों का अतः सामान्य कथन के समान
 है ॥२८१॥

इति सयममागणा

दर्शन मार्गणा से चक्षुदर्शनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का अतः
 सामान्य कथन के समान है ॥२८२॥ सावादन और मय्य-
 मिथ्यादृष्टियों का अतः नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य
 कथन के समान है ॥२८३॥ एक जीव की अपेक्षा जगत् अतः
 क्रमशः पल्य का असख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२८४॥
 उत्कृष्ट अतः कुछ कम दो हजार सागर है ॥२८५॥ असयत से
 लेकर अपमत्ता गुणस्थान तक का नाना जीवों की अपेक्षा
 अतः नहीं है, निरतर है ॥२८६॥ एक जीव की अपेक्षा
 जगत् अन्तर्मुहूर्त है ॥२८७॥ उत्कृष्ट अतः कुछ कम दो

हजार मागर है ॥२८८॥ चारों उपशमकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान ॥२८९॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥२९०॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो हजार मागर है ॥२९१॥ सपकों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२९२॥ अचक्षुर्ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२९३॥ अधिदर्शनी जीवों का अंतर अधिज्ञानियों के समान है ॥२९४॥ रेवलदर्शनी जीवों का अंतर रेवलज्ञानियों के समान है ॥२९५॥

अभिर्ज्ञानमात्रा

ल या मार्गण से कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और असत्यतमम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जातों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निम्नतर है ॥२९६॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२९७॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः कुछ कम तैतीस, सत्तरह और सात मागर है ॥२९८॥ सामान्य और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जातों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२९९॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर क्रमशः कुछ कम असत्यतम भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३००॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तैतीस, सत्तरह और सात मागर है ॥३०१॥ तजालेश्या और पद्मनेत्र्यावाला ॥ मिथ्यादृष्टि

आँ मर्मयत मर्म्यगृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३०२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३०३॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक दो गगन और अद्भुत सागर है ॥३०४॥ सामादन आँ मर्म्यगृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य करने के समान है ॥३०५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३०६॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३०७॥ मयतामयत, प्रमत्त और अप्रमत्त जीवों का नाना आँ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३०८॥ शुक्ललेण्या वालों मर्म्यगृष्टि आँ मर्मयतमर्म्यगृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३०९॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१०॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक दो गगन और अद्भुत सागर है ॥३११॥ सासात्न और मर्म्यगृष्टि जीवों का अन्तर्मुहूर्त नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य करने के समान है ॥३१२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१३॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१४॥ मयतामयत और प्रमत्त मयनों का नाना आँ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३१५॥ अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त है, निरन्तर है ॥३१६॥ एक

जगन्मय अन्तर्मुहूर्त है ॥३१७॥ उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त है ॥३१८॥ अपूर्वकृष्ण, अनिवृत्तिकृष्ण और सूक्ष्म सापराय गुणस्वानवता तीनों उपशमक जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥३१९॥ उत्कृष्ट अन्तर उपपृथग्त्व है ॥३२०॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥ उपशान्त कषाय वालों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है ॥३२३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथग्त्व है ॥३२४॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३२५॥ चारों क्षणों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२६॥ मयोगिनेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२७॥

इति लेश्यामागणा

भव्यमार्गणा से भव्यों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिनेवली तक प्रत्येक गुणस्वानवर्ती जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२८॥ अभव्य जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३२९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३०॥

इति मन्त्रमागणा

सम्यग्मार्गणा ॥ सामान्य सम्यग्दृष्टियों में असम्यक्त सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३१॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्मय अन्तर

अन्तर्मुहूर्त है ॥३३०॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व काटी है
 ॥३३३॥ संयतामयत स लेकर उपशान्तरूपाय गुणस्थान तर
 अन्येक गुणस्थानरतीयों का अन्तर अवविज्ञानियों के समान है
 ॥३३४॥ चारों क्षरक और अयोगिकेवलियों का अन्तर
 सामान्य कथन के समान है ॥३३५॥ मयोगिकेवली का
 अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३३६॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों
 में असयत सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरतर है ॥३३७॥ एक जीव की अपेक्षा
 जन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३३८॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम
 पूर्वकी वर्ष है ॥३३९॥ मयतामयत और प्रमत्तासयत जीवों
 का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है
 ॥३४०॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है
 ॥३४१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तृतीस माग है ॥३४२॥
 चारों उपशमकों का नाना जीवों की अपेक्षा जन्य स एक
 समय अन्तर है ॥३४३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है
 ॥३४४॥ एक जीव की अपेक्षा जन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है
 ॥३४५॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तृतीस माग है ॥३४६॥
 चारों क्षरक और अयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के
 समान है ॥३४७॥ मयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन
 के समान है ॥३४८॥ उदक सम्यग्दृष्टियों में असयत सम्यग्-
 दृष्टियों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३४९॥
 मयतामयतों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं

है, निम्नतर है ॥३५०॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य अन्तर
 अन्तर्मुहूर्त है ॥३५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दयासठ माग
 है ॥३५२॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की
 अपेक्षा अन्तर नडा है, निम्नतर है ॥३५३॥ एक जीव की
 अपेक्षा जयन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५४॥ उत्कृष्ट अन्तर
 कुछ अधिक तेतीम सागर है ॥३५५॥ उपशमन सम्यग्दृष्टिया
 में अमयन सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा
 जयन्य अन्तर एक समय है ॥३५६॥ उत्कृष्ट अन्तर सात
 दिन रात है ॥३५७॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य
 अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५८॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है
 ॥३५९॥ सयतासयतों का नाना जीवों की अपेक्षा जयन्य
 अन्तर एक समय है ॥३६०॥ उत्कृष्ट अन्तर चौदह
 दिन रात है ॥३६१॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य
 अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६२॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है
 ॥३६३॥ प्रमत्त और अप्रमत्त सयतों का नाना जीवों
 की अपेक्षा जयन्य अन्तर एक समय है ॥३६४॥ उत्कृष्ट
 अन्तर पन्द्रह दिन रात है ॥३६५॥ एक जीव की अपेक्षा
 जयन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६६॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्त-
 र्मुहूर्त है ॥३६७॥ तीनों उपशमन का अन्तर नाना जीवों
 की अपेक्षा जयन्य स एक समय है ॥३६८॥ उत्कृष्ट अन्तर
 र्प पृथक् है ॥३६९॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य अन्तर
 अन्तर्मुहूर्त है ॥३७०॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३७१॥

प्राणायाम जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय
 अन्तर एक समय है ॥३७२॥ इच्छा अन्तर अर्पणवत्त्व
 ॥३७३॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरं-
 ॥३७४॥ मामादन और सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवों
 अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्मय से एक समय है
 ॥३७५॥ इच्छा अन्तर पश्य का असंख्यात भाग है
 ॥३७६॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है
 ॥३७७॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना और एक जीव
 की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३७८॥ ॥३७९॥

इति सत्यवर्त्ममार्गणा ॥ ३७९ ॥
 जीव मार्गणा से सैनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का अन्तर
 सामान्य कथन के समान है ॥३८०॥ सासादन से लेकर
 प्राणायाम जीवों का अन्तर पुरुषादियों के समान
 ॥३८१॥ चारों भूतों का अन्तर सामान्य कथन के समान
 ॥३८२॥ असैनी जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८३॥ एक जीव की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८४॥

इति सैनीमार्गणा

साहा मार्गणा से आहारक जीवों में मिथ्यादृष्टियों का
 अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३८५॥ सासादन
 और सम्यग्मिध्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की
 अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥३८६॥ एक जीव

की—अपेक्षा जयन्य, अन्तर पत्य का असख्यातवा भाग
 और अन्तर्मुहूर्त है ॥३८६॥ उत्कृष्ट अन्तर अगुल के अस
 न्यातवें भाग प्रमाण असरयातासरयात उत्सर्पिणी और
 अपसर्पिणी फाल है ॥३८७॥ असयत से लेकर अपमत्त सयत
 गुणस्थान तर जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं
 है, निरतर है ॥३८८॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य अन्तर
 अन्तर्मुहूर्त है ॥३८९॥ उत्कृष्ट अन्तर अगुल के असरयातवें
 भाग प्रमाण असरयातासरयात अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी फाल
 है ॥३९०॥ चारों उपशमनों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर
 सामान्य कथन के समान है ॥३९१॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्य
 अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३९२॥ उत्कृष्ट अन्तर अगुल के असरयातवें
 भाग प्रमाण असरयातासरयात उत्सर्पिणी और अपसर्पिणी
 है ॥३९३॥ चारों सपकों का अन्तर सामान्य कथन के समान
 है ॥३९४॥ सयोगिनेवली का अन्तर सामान्य कथन के
 समान है ॥३९५॥ अनादात्म जीवों को अन्तर कर्मण काय
 योगियों के समान है ॥३९६॥ किन्तु विशेषता यह है कि
 अयोगिनेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९७॥

इति आद्वारमार्गो

॥ ३९८ ॥ इति अन्तराधिकारः ॥ ३९९ ॥
 ॥ ४०० ॥ इति अन्तराधिकारः ॥ ४०१ ॥
 ॥ ४०२ ॥ इति अन्तराधिकारः ॥ ४०३ ॥

अथ भावाधिकार

भाव कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि औदारिक भाव है ॥२॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥४॥ असयतमस्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है, क्षायिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥५॥ किन्तु असयतत्व औदारिक भाव से है ॥६॥ संयतसंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत क्षयोपशमिक भाव है ॥७॥ अपूर्व करण आदि चारों गुणस्थानवर्ती उपशमक औपशमिक भाव है ॥८॥ योगे क्षय, संयोगिन्नेवली और अयोगिकेवली क्षायिक भाव है ॥९॥

इति सामान्यकथन ॥ १० ॥ गतिमार्गणा से नरकगति में सामान्य नागरियों में मिथ्यादृष्टि औदारिक भाव है ॥१०॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥११॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥१२॥ असयतमस्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है, क्षायिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥१३॥ किन्तु असयतत्व औदारिक भाव से है ॥१४॥ इस प्रकार प्रथम पृथ्वी में नागरियों के भाव होते हैं ॥१५॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नरकों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के भाव सामान्य कथन के समान है ॥१६॥ असयतमस्यग्दृष्टि

औपशमिक भाव भी है और सयोपशमिक भाव भी है ॥१७॥
 किन्तु असयतत्व औदयिक भाव से है ॥१८॥ त्रियंचगति में
 सामान्य त्रियंच, पचन्द्रिय त्रियंच, पचन्द्रिय त्रियंचपर्याप्त और
 पचन्द्रिय त्रियंच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयत
 सयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥१९॥
 विशेष बात यह है कि पचन्द्रिय त्रियंच योनिमतियों में असयत
 सम्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है और सयोपशमिक भाव
 भी है ॥२०॥ किन्तु असयतत्व औदयिक भाव से है ॥२१॥
 मनुष्यगति में सामान्य मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियों
 में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिन्याली गुणस्थान तक भाव
 सामान्य कथन के समान है ॥२२॥ देवगति में सामान्य देवों
 में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक भाव सामान्य
 कथन के समान है ॥२३॥ भवन्वासी व्यन्तर ज्योतिमी और
 सर्व द्रवियों, में मिथ्यादृष्टि सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि
 से भाव सामान्य कथन के समान है ॥२४॥ अमयत सम्यग्दृष्टि
 औपशमिक भाव भी है और सयोपशमिक भाव भी है ॥२५॥
 किन्तु असयत औदयिक भाव से है ॥२६॥ मोक्षमं देशानन्तर
 से लेकर नरप्रययक, पयत विमानरामी देवों में मिथ्यादृष्टि
 से लेकर असयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के
 समान है ॥२७॥ अनुत्ति आदि से लेकर सर्वार्थसिद्ध तक
 विमानरामी देवों में अमयत सम्यग्दृष्टि औपशमिक भी है,
 आयिक भी है और सयोपशमिक भाव भी है ॥२८॥ किन्तु

असयतत्वं आदित्य भाव से, है-॥२६॥

इति ततिमागणा

त्रिपमार्गणा स पचेन्द्रियपर्याप्तकों म मिथ्यादृष्टि से लेकर,
अयागिकवली गुणस्थान तक भार सामान्य कथन के समान है
॥३०॥ कायमार्गणा से सामान्य प्रसङ्गाधिक और प्रसङ्गाधिक
पर्याप्तकों म मिथ्यादृष्टि से लेकर, अयागिकवली गुणस्थान तक
भार सामान्य कथन के समान है-॥३१॥

इति इन्द्रिय और कायमार्गणा

यागमार्गणा स सर्व मनोयागी, सर्व वचनयागी, सामान्य काय-
यागी और आदित्य काययोगियों म मिथ्यादृष्टि से लेकर
अयागिकवली गुणस्थान तक भार सामान्य कथन के समान है
॥३२॥ आदित्यमिथ काययोगियों म मिथ्यादृष्टि और सासा-
दित्य के भार सामान्य कथन के समान है ॥३३॥ असयतसम्यग्-
दृष्टि ॥ सायिक भार भी है और सयापशमिक भार भी है
॥३४॥ किन्तु असयतत्वं आदित्य और स है ॥३५॥ सयागि
कवली-सायिक भाव है ॥३६॥ वैक्रियर, काययोगियों से
मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक भार सामान्य
कथन के समान है ॥३७॥ वैक्रियकमिथ काययोगियों म
मिथ्यादृष्टि सामान्य और असयत सम्यग्दृष्टि सामान्य
कथन के समान है ॥३८॥ आदित्य काययागी और आदा-
दित्य काययोगियों, स प्रसङ्गाधिक सयापशमिक भार है
॥३९॥ काययोगियों म मिथ्यादृष्टि

मम्यगच्छि और संयोगिकेवली 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४०॥

वेन्मार्गणा से म्त्रीरेदी, पुरुषवेनी और नपु सकरेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिष्टचिह्नरुण गुणस्थान तक 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४१॥ अपगतवेदियों में अनिष्टचिह्नरुण से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४२॥

कपायमार्गणा से क्रोधरूपाय, भानरूपायी, मायाकपायी और लोभरूपायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर गुणस्थान तक 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४३॥ अकपायी, जीवों में उपशान्तकपाय आदि चारों गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान हैं ॥४४॥

ज्ञानमार्गणा से मत्यज्ञानी, अज्ञानी और निमग्नज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टि और मासादन भाव सामान्य कथन के समान है ॥४५॥ मतिज्ञानी, अज्ञानी और अग्रिज्ञानियों में असत्य से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४६॥ मन पर्यवज्ञानियों में प्रमत्तमयत से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक 'भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४७॥ केवलज्ञानियों में 'संयोगिकेवली' भाव सामान्य कथन

के समान है ॥४८॥

इति ज्ञानमार्गणा

सुखमार्गणा से मयनों में प्रमत्त से लेकर अयोगिनेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४९॥

सामाधिक और उन्नेत्स्यापत्ता में प्रमत्त से लेकर अनि-
हिकृण गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान
है ॥५०॥ पण्डितशुद्धि में प्रमत्तमयत और अप्रमत्त

सयत भाव सामान्य कथन के समान है ॥५१॥ सूक्ष्ममार्ग-
यिक में सूक्ष्ममार्गयिक उपशमिक और क्षपक भाव सामा-
न्य कथन के समान है ॥५२॥ यथाव्याप्त में उपशान्त कथाय

ज्ञान चारों गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान है
॥५३॥ सुयतानयत भाव सामान्य कथन के समान है ॥५४॥

मययनों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अमयत गुणस्थान तक
भाव सामान्य कथन के समान है ॥५५॥

इति संयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से बहुदर्शनी और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि
से लेकर क्षीणकथाय गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन
के समान है ॥५६॥ अक्षिदर्शनी जीवों के भाव अक्षिदर्शनियों
के समान है ॥५७॥ केवल दर्शनी नीरों के भाव केवल-
ज्ञानियों के समान है ॥५८॥

इति दर्शनमार्गणा

लेशमार्गणा से कुण्ड, नील और अक्षयणीयों के भाव

म आदि के चार गुणस्थानकी भाव सामान्य कथन के समान है ॥५६॥ तेजो और पद्मग्या वालों में मिथ्या दृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५७॥ शुक्ललेखा वालों में मिथ्या दृष्टि से लेकर सयोगिनेयली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५८॥ भव्यमार्गणा से भव्य मिथ्या दृष्टि से लेकर अयोगिनेयली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५९॥ अमव्य परिणामिक भाव है ॥६०॥

इति लब्धा और भव्य मार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टियों में असत्य से लेकर अयोगिनेयली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६१॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में असत्य सम्यग्दृष्टि क्षायिक भाव है ॥६२॥ क्षायिक सम्यक्त्व ही होता है ॥६३॥ किन्तु असत्यत्व आदित्य भाव से है ॥६४॥ मयतास्यत, प्रमत्तामयत और अप्रमत्तास्यत क्षयोपशमिक भाव है ॥६५॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥६६॥ चारों उपशमक गुणस्थानों में आनन्दमिक भाव है ॥६७॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥६८॥ चारों क्षय, मयोगिनेयली और अयोगिनेयली गुणस्थानों में क्षायिक भाव है ॥६९॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥७०॥ वेदसम्यग्दृष्टियों में असत्यसम्यग्दृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥७१॥ सम्यग्दर्शन क्षयोपशमिक होता है ॥७२॥ किन्तु असत्यत्व

आदित्यिक भाव से है ॥७६॥ सयतासयत, प्रमत्त और अम-
 त्तमयत क्षयोपशमिक भाव है ॥७७॥ सम्यग्दर्शन क्षयोपश-
 मिक भाव है ॥७८॥ उपशम-सम्यग्दृष्टियों में असयत
 सम्यग्दर्शन औपशमिक भाव है ॥७९॥ सम्यग्दर्शन औप-
 शमिक होता है ॥८०॥ किन्तु असयतत्व आदित्यिक भाव
 है ॥८१॥ सयतासयत, प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत
 क्षयोपशमिक भाव है ॥८२॥ सम्यग्दर्शन औपशमिक होता
 है ॥८३॥ अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानों में औपशमिक
 भाव है ॥८४॥ सम्यग्दर्शन औपशमिक ही होता है ॥८५॥
 समादन सम्यग्दृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८६॥
 सम्यग्मिथ्यादृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८७॥
 मिथ्यादृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८८॥ ॥८९॥
 इति सम्यक्स्वमार्गणा
 सैनीमार्गणा में सैनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय
 गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥९०॥ असैनी
 आदित्यिक भाव है ॥९१॥ आहारमार्गणा से आहारकों में
 मिथ्यादृष्टि से लेकर संयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य
 कथन के समान है ॥९२॥ अनाहरक जीवों के भाव कर्मण-
 काययोगियों के समान है ॥९३॥ किन्तु विशेषतः यह है कि
 कर्मणकाययोगी अयोगिकेवली क्षादिक भाव है ॥९४॥
 इति मावाधिकार

अल्पबहुत्वाधिकारं ॥ अथ बहुल कान्, सामान्यः और विशेषः अपक्षा स दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से अर्धपरणादि, तीनों गुणस्थानों में, उपगमक, प्रवण की अपक्षा तुल्य और मरसे अत्य है ॥२॥ उपशान्तकपाय पूर्वोक्त, प्रमाण ही है ॥३॥ उपशान्त कपाय स क्षपक मख्यात गुणित है ॥४॥ क्षीण कपाये, पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥५॥ सयोगिकेवली और असयोगिकेवली प्रवेश की अपक्षा तुल्य और पूर्वोक्त, प्रमाण, हैं ॥६॥ सयोगिकेवली फाल की अपक्षा कमरयात, गुणित है ॥७॥ सयोगिकेवलियों से अधपक्ष और अनुपशमन प्रममक्त सयत सख्यात गुणित है ॥८॥ प्रममक्तसयतों से प्रमक्तसयत मखात गुणित है ॥९॥ प्रमक्तमयतों से सयतासयत, अमख्यात गुणित है ॥१०॥ सयतासयतों से मामादन असरयात गुणित है ॥११॥ मासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि सरयाते गुणित है ॥१२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असयेत सम्यग्दृष्टि असख्यात गुणित है ॥१३॥ असयेत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित है ॥१४॥ असयेत गुणस्थान में उपगमक सयत कम है ॥१५॥ उपशमकों से शायिक अमखात गुणित है ॥१६॥ शायिकों से चेद्रक असख्यात गुणित है ॥१७॥ सयतासयत गुणस्थान में शायिक सयत कम ॥१८॥ शायिकों से उपशमक असरयात गुणित है ॥१९॥ उपगमकों से चेद्रक अमखात गुणित है ॥२०॥ प्रमत और

कर्मना में उपशमक कर्म से कम है ॥२१॥ उपशमकों से
 सायिक अमरुपात गुणित है ॥२२॥ सायिकों से वेदक
 मरुपात गुणित है ॥२३॥ इसी प्रकार उपशमकों और
 सायिक गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्प बहुत्व है ॥२४॥
 धर्मरक्षण आदि तीनों गुणस्थानों में उपशमक सबसे कम है
 ॥२५॥ उपशमकों से क्षायक सम्बन्धित गुणित है ॥२६॥
 इति सामान्यवर्णनम् ॥२७॥
 विशेष गति मार्गणा से अनरुगति में सामान्य नारकियों में
 सासादन से सब कम है ॥२७॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्या-
 दृष्टि मरुपात गुणित है ॥२८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि से असंयत
 सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित है ॥२९॥ अमयत सम्यग्दृष्टियों
 से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित है ॥३०॥ असंयत गुण-
 स्थान में उपशमक सब से कम है ॥३१॥ उपशमकों से
 सायिक अमरुपात गुणित है ॥३२॥ सायिकों से वेदक अस-
 र्पात गुणित है ॥३३॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी में अल्प-
 बहुत्व है ॥३४॥ दूसरी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक सासादन
 सब से कम है ॥३५॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात
 गुणित है ॥३६॥ सम्यग्दृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात
 गुणित है ॥३७॥ अमयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अम-
 र्पात गुणित है ॥३८॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सब
 से कम है ॥३९॥ उपशमकों से वेदक असंख्यात गुणित है
 ॥४०॥ त्रिपञ्च गति में सामान्य त्रिपञ्च, सामान्य

तिर्यच, पचेन्द्रिय, पर्याप्त और पचेन्द्रिय यानिमती तिर्यचों में
 सयतामयत सरा में कम है ॥४१॥ सयतामयतों से सामादन
 असख्यात गुणित है ॥४२॥ सामादनो से सम्यग्मिध्यादृष्टि
 सरयात गुणित है ॥४३॥ सम्यग्मिध्यादृष्टियों से असयत
 सम्यग्दृष्टि असख्यात गुणित है ॥४४॥ अमयत सम्यग्दृष्टियों
 से मिध्यादृष्टि अनन्त गुणित और असख्यात गुणित है
 ॥४५॥ असयत गुणस्थान में उपशमक सरा में कम है ॥४६॥
 उपशमकों से क्षायिक असरयात गुणित है ॥४७॥ क्षायिकों
 से वेदक असख्यात गुणित है ॥४८॥ मयतासयत गुणस्थान
 में उपशमक सरा में कम है ॥४९॥ उपशमकों से वेदक अस-
 रयात गुणित है ॥५०॥ विशेषता यह है कि पचेन्द्रिय, तिर्यच
 योनिमतियों में अमयत और सयतामयत गुणस्थान में उप-
 शमक उनसे भी कम है ॥५१॥ उपशमकों से वेदक असख्यात
 गुणित है ॥५२॥ मनुष्य गति में भामान्य मनुष्य, मनुष्य-
 पर्याप्त और मनुष्यनियों में अपूर्वकरण आदि तीनों गुण-
 स्थानों से उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अत्य है
 ॥५३॥ उपशान्त कषाय प्रवेश से पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥५४॥
 उपशान्त कषाय से क्षपक सख्यात गुणित है ॥५५॥ क्षीण
 कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥५६॥ सयोगिनेवली और अर्यों
 गिनेवली भी प्रवेश से तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही है
 ॥५७॥ सयोगिनेवली सचय काल की अपेक्षा सख्यात गुणित
 है ॥५८॥ सयोगिनेवली से अक्षपक और अनुपशमक, अप्रमत्त

सयत सरयात गुणित है ॥५६॥ अपमत्त सयतों, से प्रमत्तामयत
 सरयात, गुणित है ॥६०॥ प्रमत्त, सयतों से, सयतामयत
 सरयात गुणित है ॥६१॥ सयतासयतों से, सासादन, सरयात
 गुणित है ॥६२॥ सासादनों से, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सरयात
 गुणित है ॥६३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों, से, असयत, सम्यग्दृष्टि
 सयता गुणित है ॥६४॥ असयत, सम्यग्दृष्टियों, से, मिथ्या-
 दृष्टि असरयात गुणित और सरयात गुणित है ॥६५॥
 असयत, गुणस्थान, में उपगमक, सयसे, कम, है ॥६६॥ उप-
 शमकों से, क्षायिक, सरयात गुणित है ॥६७॥ क्षायिकों से,
 एक सरयात, गुणित है ॥६८॥ सयतामयत गुणस्थान में,
 क्षायिक सबसे कम है ॥६९॥ क्षायिकों, से उपशमक सरयात
 गुणित है ॥७०॥ उपशमकों, से वेदक, सयता गुणित है ॥
 ७१॥ प्रमत्त और अपमत्त गुणस्थान में उपगमक सयत,
 कम है ॥७२॥ उपगमकों, से, क्षायिक सरयात, गुणित है ॥
 ७३॥ क्षायिकों से वेदक सरयात गुणित है ॥७४॥ निज-
 पता यह है कि मनुष्यनियों में, असयत, सयतासयत, प्रमत्त
 और अपमत्त गुणस्थान में क्षायिक, उनसे भी कम है ॥७५॥
 क्षायिकों से उपशमक सरयात गुणित है ॥७६॥ उपशमकों
 से वेदक सरयात, गुणित है ॥७७॥ इसी प्रकार, उपगमक
 और उपक गुणस्थानों में, मध्यक्त्व सम्बन्धी, अल्प
 बहुत्त है ॥७८॥ उपशमक सयसे, कम है ॥७९॥ उपशमकों-
 से क्षायिक, सरयात गुणित है ॥८०॥ वेदक, सरयात-

न्ये देवों में सामादन (मर स कम है ॥८१॥ सासादनों) में
 सम्यग्मिध्यादष्टि सरयात गुणित है ॥८२॥ सम्यग्मिध्या
 दष्टियों से अमयतमस्यग्मिध्या अमरयात गुणित है ॥८३॥
 अमयतमस्यग्मिध्या से मिध्यादष्टि अमरयात गुणित है
 ॥८४॥ अमयते गुणस्थान में उपशमके मरम कम है ॥८५॥
 उपशमकों से क्षाधिक अमरयात गुणित है ॥८६॥ क्षाधिकों
 से वेदक अमरयात गुणित है ॥८७॥ भवनयासी, व्यतर,
 ज्योतिषी देव और मर देवियों का अमरयात गुणित है ॥८८॥
 वेदक अमरयात गुणित है ॥८९॥ मौर्य त लेकर महत्कार
 तपे फलयासी देवों में अमरयात गुणित है ॥९०॥
 सामादनों में सम्यग्मिध्यादष्टि मरयात गुणित है ॥९१॥
 सम्यग्मिध्यादष्टियों से मिध्यादष्टि अमरयात गुणित
 है ॥९२॥ सम्यग्मिध्यादष्टियों से अमयते, सम्यग्मिध्या
 सरयात गुणित है ॥९३॥ अमयत गुणस्थान में उपशमकों
 सरसे कम है ॥९४॥ उपशमकों में क्षाधिक अमरयात गुणित
 है ॥९५॥ क्षाधिकों से वेदक अमरयात गुणित है ॥९६॥
 मर अनुश्रितों से अमरयात तपे विमानयासी देवों में अमर
 यत गुणस्थान में उपशमकों मरस कम है ॥९७॥ उपशमकों
 से क्षाधिक अमरयात गुणित है ॥९८॥ क्षाधिकों से वेदक
 अमरयात गुणित है ॥९९॥ सौर्य मिद्धि विमानयासी देवों में

असायत गुणस्थानम् उपशमक सप्तसे ॥१००॥ उप
 शमको स क्षायिकु मायातः गुणित है ॥१०१॥ क्षायिको से
 वेदक सख्यात गुणित है ॥१०२॥ इति शक्तिमार्गणा
 इन्द्रियमार्गणा से सामान्य पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय-पर्याप्तों
 में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है । केवल विशेषता
 यह है कि असायत सम्यग्दृष्टिया में मिथ्यादृष्टि असा-
 ख्यात गुणित है ॥१०३॥ कायमार्गणा में उपशमकायिक
 और वसकायिक पर्याप्तों में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के
 समान है । केवल विशेषता यह है कि असायत सम्यग्दृष्टियों
 में मिथ्यादृष्टि अनख्यात गुणित है ॥१०४॥ इति शक्ति
 योगमार्गणा से मय मनोयोगी, मय तचनयोगी, काययोगी
 और आदितिक काययोगियों में अपूर्वकगण आदि तीन गुण-
 स्थानों में उपशमक मवशा की अपेक्षा तुल्य और अल्प है
 ॥१०५॥ उपशान्त कपाय ॥ पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०६॥
 उपशान्त कपायों सक्षपक सख्यात-गुणित हैं ॥१०७॥ क्षीण-
 कपाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०८॥ मयोगिकेवली मवेश की
 अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०९॥ सयोगिकेवली-सचय-
 कालों की अपेक्षा सख्यात-गुणित है ॥११०॥ सयामिकेवली
 से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसयत सख्यात-गुणित
 है ॥१११॥ अप्रमत्तमयों से प्रमत्तसयत मर्यात हैं ॥११२॥

प्रमेत्तमयतो ' से संयतार्मपत' असंख्यात गुणित है ॥११३॥
 मयतासंयतो से सासादन असंख्यात गुणित है ॥११४॥
 मामादन से सम्यग्मिध्यादष्टि संख्यात गुणित है ॥११५॥
 सम्यग्मिध्यादष्टियों से असंयतसम्यग्दष्टि असंख्यात गुणित
 है ॥११६॥ असंयतसम्यग्दष्टियों से मिध्यादष्टि असंख्यात
 गुणित है, और अनन्त गुणित है ॥११७॥ असंयत, संयत,
 सायत, प्रमेत्तसंयत और अप्रमेत्तसंयत गुणस्थान में सम्यक्त्व
 सम्यग् ' अल्पगुह्यत्व ' मानान्य कथन के समान है ॥११८॥
 इसी प्रकार उपशमक और क्षपण गुणस्थानों में है ॥११९॥
 उपशमक संयते कम है ॥१२०॥ उपशमकों से क्षपक संख्याते
 गुणित है ॥१२१॥ औदारिकमित्र काययोगियों में संयोगि-
 कवली सबसे कम है ॥१२२॥ संयोगिनेत्री जिनों से असं-
 यत सम्यग्दष्टि संख्यात गुणित है ॥१२३॥ असंयत सम्यग्-
 दष्टियों से मामादन असंख्यात गुणित है ॥१२४॥ सासादनों
 से मिध्यादष्टि अनन्त गुणित है ॥१२५॥ असंयत गुणस्थान
 में सायिक सबसे कम है ॥१२६॥ सायिकों से वैदिक संख्यात
 गुणित है ॥१२७॥ वैक्रियक काययोगियों में अल्पगुह्यत्व उच-
 गति के समान है ॥१२८॥ वैक्रियकमित्र काययोगियों में
 सासादन सबसे कम है ॥१२९॥ सासादनों से असंयत
 सम्यग्दष्टि संख्यात गुणित है ॥१३०॥ असंयत सम्यग्दष्टियों
 से मिध्यादष्टि असंख्यात गुणित है ॥१३१॥ असंयत गुण-
 स्थान में उपशमक संयते कम है ॥१३२॥ उपशमकों से

सायिक सख्यात गुणित है ॥१३३॥ सायिकों से वेदक असख्यात गुणित है ॥१३४॥ आहारक काययोगी और आहारकमित्र काययोगियों में प्रमत्तसयत गुणस्थान में सायिक तनस कम है ॥१३५॥ सायिकों से वेदक सख्यात गुणित है ॥१३६॥ कामणकाययोगियों में संयोगिकेवली जिन तनस कम है ॥१३७॥ संयोगिकेवली जिनों से सासादन असख्यात गुणित है ॥१३८॥ सासादनो से असयत सम्यग्दृष्टि असख्यात गुणित है ॥१३९॥ असयत सम्यग्दृष्टियों से मिदयादृष्टि अनन्तगुणित है ॥१४०॥ असयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम है ॥१४१॥ उपशमकों से सायिक सख्यात गुणित है ॥१४२॥ सायिकों से वेदक असख्यात गुणित है ॥१४३॥

इति योगमार्गणा ॥ १॥ ३॥ १॥
वेदमार्गणा से स्त्रीवेदियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों के उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥१४४॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित है ॥१४५॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तमयत सख्यात गुणित है ॥१४६॥ अप्रमत्तसयतों से प्रमत्तसयत सख्यात गुणित है ॥१४७॥ प्रमत्तसयतों से सयतासयत असख्यात गुणित है ॥१४८॥ सयतामयतों से सासादन असख्यात गुणित है ॥१४९॥ सासादनो से सम्यग्मिथ्यादृष्टि सख्यात गुणित है ॥१५०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असयत सम्यग्दृष्टि अस-

स्यात् गुणित है ॥१५१॥ असयत् सम्यग्दृष्टियों, स मिथ्या-
 दृष्टि असत्स्यात् गुणित है ॥१५२॥ असयत् और सयतामयत्
 गुणस्थान में सायिक, सरसे कम है ॥१५३॥ सायिकों स
 उपशमक असत्स्यात् गुणित है ॥१५४॥ उपशमकों स, वेदक
 असत्स्यात् गुणित है ॥१५५॥ ममत्तसयत् और अममत्तसयत्
 गुणस्थान में सायिक, सरसा कम है ॥१५६॥ सायिकों से
 उपशमक, मर्यादा, गुणित है ॥१५७॥ उपशमकों से वेदक
 सत्स्यात् गुणित है ॥१५८॥ इसी प्रकार, अपूर्वकरण और
 अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में अलम्बनत्व है ॥१५९॥ उप-
 शमक सरसे कम है ॥१६०॥ उपशमकों से क्षपक सत्स्यात्
 गुणित है ॥१६१॥ पुरुषादियों में अपूर्वकरण और अनि-
 वृत्तिकरण, गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य
 और अस है ॥१६२॥ उपशमकों से क्षपक सत्स्यात् गुणित
 है ॥१६३॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक, अममत्तसयत्
 सत्स्यात् गुणित है ॥१६४॥ अममत्तों से ममत्तसयत् सत्स्यात्
 गुणित है ॥१६५॥ ममत्तसयत्, स-सयतामयत्, असत्स्यात्
 गुणित है ॥१६६॥ सयतामयत्, स सासादन असत्स्यात्
 गुणित है ॥१६७॥ सासादनो से, सम्यग्मिथ्यादृष्टि सत्स्यात्
 गुणित है ॥१६८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों स असयत्, सम्यग्दृष्टि
 असत्स्यात् गुणित है ॥१६९॥ असयत् सम्यग्दृष्टियों, स
 मिथ्यादृष्टि असत्स्यात् गुणित है ॥१७०॥ असयत्, सयता-
 मयत्, ममत्त और अममत्त गुणस्थान, में अलम्बनत्व, सामा-

न्य कथन के समान हैं ॥१७१॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनितृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥१७२॥ उपशमक सबसे कम है ॥१७३॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित है ॥१७४॥ नपुसकवेदियों में अपूर्वकरण और अनितृत्तिकरण, गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥१७५॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित है ॥१७६॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥१७७॥ अप्रमत्तसयतों से प्रमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥१७८॥ प्रमत्तसयतों से सयतासयत अमरुतात गुणित हैं ॥१७९॥ सयतासयतों से सासादेन अमरुतात गुणित हैं ॥१८०॥ सासादेनों से सम्यग्मिध्यादृष्टि सख्यात गुणित हैं ॥१८१॥ सम्यग्मिध्यादृष्टियों से असयतसम्यग्दृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥१८२॥ असयत सम्यग्दृष्टियों से मिध्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥१८३॥ असयत और सयतासयत गुणस्थान में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान हैं ॥१८४॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम है ॥१८५॥ क्षायिकों से उपशमक सख्यात गुणित हैं ॥१८६॥ उपशमकों से वेदक सख्यात गुणित हैं ॥१८७॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनितृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥१८८॥ उपशमक सबसे कम है ॥१८९॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित हैं ॥१९०॥ अप्रमत्त वेदियों में अपूर्वकरण और अनितृत्तिकरण, गुणस्थानों में

उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥१६१॥ उप-
शान्तकपायी पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१६२॥ उपशान्त कपायियों
से क्षपक सरयात गुणित है ॥१६३॥ क्षीणकपायी पूर्वोक्त
प्रमाण ही है ॥१६४॥ सयोगिनेवली और अयोगिनेवली
मन्त्र की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१६५॥
सयोगिनेवली, सवयकाल की अपेक्षा मरुमात गुणित
है ॥१६६॥

इति वेदमन्त्राणां ॥ १६७ ॥
कपायमार्गणा से क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और
लोभकपायियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिरक्षण गुणस्थानों
में उपशमक जीव प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है
॥१६७॥ उपशमकों से क्षपक मरुमात गुणित है ॥१६८॥
केवल विशपता यह है कि लोभकपायी क्षपकों से सूक्ष्म सापत्न
रागिर, उपशमक विशेष अधिक है ॥१६९॥ उपशमकों से
क्षपक सरयात गुणित है ॥२००॥ क्षपकों से अक्षपक और अनु-
पशमक अप्रमत्तसयत मरुमात गुणित है ॥२०१॥ अप्रमत्त-
सयतों से प्रमत्तसयत मरुमात गुणित है ॥२०२॥ प्रमत्त-
सयतों से सयतामयत असरयात गुणित है ॥२०३॥ मयता-
सयतों से सासादन असरयात गुणित है ॥२०४॥ सासादनों
से सम्यग्मिध्यादृष्टि सरयात गुणित है ॥२०५॥ सम्यग्मिध्या-
दृष्टियों से असयतसम्यग्दृष्टि असरयात गुणित है ॥२०६॥
असयतसम्यग्दृष्टियों से मिध्यादृष्टि अनन्त गुणित है ॥२०७॥

असयतः सयतासयतः प्रमत्तसयतः और अममृत्तसयतः गुणस्यामः
 में अल्पवद्वत्त्वः सामान्यः कृपणः के समान है ॥२०८॥ इसी
 प्रकार अपूर्वकरणः अतिवृत्तिकरणः गुणस्यामो में अल्पवद्वत्त्वः
 है ॥२०९॥ उपगमकः सर्वसे कम है ॥२१०॥ उपशमको से
 संप्रकः सख्यातः गुणितः है ॥२११॥ अस्यासी जोगो से उप-
 शान्तकपायः सवसे कम है ॥२१२॥ उपशान्तकपायः से
 क्षीणकपायः सख्यातः गुणितः है ॥२१३॥ सुयोगिकेवली और
 अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और प्रवोक्तः प्रमाण ही
 है ॥२१४॥ सुयोगिकेवली से उन्नयः काल की अपेक्षा सख्यातः
 गुणितः है ॥२१५॥ लो ॥६६५॥ ५ में छे छामा कर्को छामा
 ॥६६५॥ ५ कागी ॥ ५ मि ॥ ५ ययमामा ॥ ५ कफाफाफा ॥ गो
 शान्तकपायः से सत्यशान्ती भुताशान्ती और विभवाशान्तियों में
 सासादनः सब से कम है ॥२१६॥ सासादनों से मिथ्यादृष्टि
 अनन्तः गुणित और असंख्यातः गुणित है ॥२१७॥ सति ॥ यत
 और अविद्वानियों की अपूर्वकरणः आदि शीतः गुणम्यातो में
 उपशमकः प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥२१८॥ उप-
 शान्तकपायः प्रवोक्तः प्रमाण ही है ॥२१९॥ उपशान्तकपायियों से
 संप्रकः सख्यातः गुणितः है ॥२२०॥ अपको से क्षीणकपायः प्रवोक्तः
 प्रमाण ही है ॥२२१॥ क्षीणकपायियों से अप्रक और अनुपशमकः
 अप्रमत्तसयतः सख्यातः गुणित है ॥२२२॥ अपमत्तसयतो से प्रमत्त-
 सयतः सख्यातः गुणित है ॥२२३॥ प्रमत्तमसुतो से सयतासयतः
 असख्यातः गुणित है ॥२२४॥ सयतासयतो से असयतः सम्य-

दृष्टि असायत गुणित है ॥२२॥ प्रत्यक्ष सयत, 'सयतासयत',
 प्रयत्नासयत और अयमत्तासयत गुणस्थान में अत्यवदुत्व
 सामान्य कथन के समान है ॥२२६॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण
 आदि तीन गुणस्थानों में अत्यवदुत्व है ॥२२७॥ उपशमक
 सबसे कम है ॥२२८॥ उपशमकों से क्षपक मर्यादा गुणित
 है ॥२२९॥ मन पर्यवधानियों में अपूर्वकरण आदि तीन
 गुणस्थानों में उपशमक 'मन' की अपेक्षा तुल्य और अत्यवदुत्व
 है ॥२३०॥ उपशमक 'क्षपाय' पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥२३१॥
 उपशमकस्थानों से क्षपक मर्यादा गुणित है ॥२३२॥ क्षीण-
 क्षपाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥२३३॥ क्षीणरूपाय से अक्षपक
 और अनुपशमक अयमत्तासयत मर्यादा गुणित है ॥२३४॥
 अयमत्तासयत से प्रयत्नासयत मर्यादा गुणित है ॥२३५॥
 प्रयत्नासयत और अयमत्तासयत गुणस्थान में उपशमक सबसे
 कम है ॥२३६॥ उपशमकों से क्षापिक मर्यादा गुणित है
 ॥२३७॥ क्षापिकों से वेदक मर्यादा गुणित है ॥२३८॥ इसी
 प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन उपशमक गुणस्थानों में अत्य-
 वदुत्व है ॥२३९॥ उपशमक सबसे कम है ॥२४०॥ उप-
 शमकों से क्षपक मर्यादा गुणित है ॥२४१॥ केवल ज्ञानियों
 में सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिन प्रवेश की अपेक्षा
 तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥२४२॥ सयोगिकेवली
 संचयकाल की अपेक्षा मर्यादा गुणित है ॥२४३॥

सयममार्गणां से, सयतो मे, अपूर्णकण आदि तीन गुणस्थानों
 में उपशमक-प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥२४४॥
 उपशान्तकपाय पूराक्त प्रमाण ही है ॥२४५॥ उपशान्तकपायों
 में सप्तक, सख्यात गुणित है ॥२४६॥ क्षीणकपाय पूरोक्त
 प्रमाण ही है ॥२४७॥ सयोगिकेवली-और अयोगिकेवली
 प्रवेश की अपेक्षा तुल्य-और पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥२४८॥
 सयोगिकेवली, संवयकाल की-अपेक्षा, सख्यात गुणित है
 ॥२४९॥ सयोगिकेवली, जिनों, सप्तक, और अनुपशमक
 अममत्तासयत-सख्यात गुणित है ॥२५०॥ अममत्ता सयतों
 में प्रमत्तासयत, सख्यात गुणित है ॥२५१॥ प्रमत्ता और
 अममत्ता गुणस्थान में, उपशमक सबसे-कम है ॥२५२॥
 उपशमकों से क्षायिक सख्यात गुणित है ॥२५३॥ क्षायिकों
 से वेदक मख्यात गुणित है ॥२५४॥ इमी प्रकार, अपूर्णकण
 आदि तीन गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥२५५॥ उपशमक
 सबसे-कम है ॥२५६॥ उपशमकों से क्षयक सख्यात गुणित
 है ॥२५७॥ सामायिक-और छेदोपस्थापना में, अपूर्णकण
 और अनिवृत्तिकण, गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की
 अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥२५८॥ उपशमकों से क्षय
 मख्यात गुणित है ॥२५९॥ सप्तकों से अक्षपक और अनुपश-
 मक अममत्तासयत, सख्यात गुणित है ॥२६०॥ अममत्तासयतों
 में प्रमत्तासयत, सख्यात गुणित है ॥२६१॥ प्रमत्ता और अम-
 मत्ता गुणस्थान में उपशमक सबसे कम है ॥२६२॥ उपशमकों

'स सायिक' सोच्यते गुणित' है ॥२६३॥ सायिको से वेदक
 'सर्वात' गुणित' है ॥२६४॥ इमी प्रकार अपूर्वकरण आग
 'ओनट्टिफरण, गुणस्थानो म अन्तरादुत्वं है ॥२६५॥ उपशमक
 'मधमे' कर्म है ॥२६६॥ अस्मिको से सपका सख्यात' गुणित
 ' ॥२६७॥ परिहार' रिशुद्धि' मे' कममर्चनयत मे' स' धर्म' है
 ' ॥२६८॥ अपमत्त' सेपतो' से मे' स' मयत' स' र' पान' गुणित' है
 ' ॥२६९॥ प्रमत्त' आग' अपमत्त' गुणस्थान' मे' सायिक' से' से
 ' कर्म' है ॥२७०॥ सायिको से वेदक' सखात' गुणित' है ॥२७१॥
 'क्षुधमे' सोरतायिक' मे' स' म' सापसायिक' उपशमक' अल्प' है
 ' ॥२७२॥ उपशमको' मे' स' प' स' स' खात' गुणित' है ॥२७३॥
 'य' र' यो' पान' मे' अल्प' धन' अ' पायी' जायो' के' समान' है
 ' ॥२७४॥ सयती' मयत' मे' अ' न' र' दुत्वं' नहीं' है ॥२७५॥ सयती
 ' सयत' गुणस्थान' मे' सायिक' से' से' कर्म' है ॥२७६॥ सायिको
 ' से' उपशमक' अ' स' र' यान' गुणित' है ॥२७७॥ उपशमको से
 ' वेदक' अ' म' र' पोत' गुणित' है ॥२७८॥ असिपतो' मे' मांसादने
 ' मे' से' कर्म' है ॥२७९॥ मांसादनों से सम्यग्मि' पाद' दृष्टि' स' स' खात
 ' गुणित' है ॥२८०॥ सम्यग्मि' दृष्टि' दृष्टि' से' अ' स' यत' म' म्य
 ' दृष्टि' अ' स' र' यान' गुणित' है ॥२८१॥ असयत' म' म्य' दृष्टि' यो' स
 ' मि' दृष्टि' अ' न' न' त' गुणित' है ॥२८२॥ अमयत' गुणस्थान' मे
 ' उपशमक' स' य' स' कर्म' है ॥२८३॥ उपशमको से सायिक' अ' स' र' यान
 ' गुणित' है ॥२८४॥ सायिको से वेदक' अ' म' न' यान' गुणित' है ॥२८५॥

दर्शनमार्गणा, से चक्षुदर्शनी, और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्या-
दृष्टि स लेकर क्षीणरूपाय, गुणस्थान तक अत्यवहुत्व सामान्य
यवन के समान है ॥२८६॥ विशेषता यह है कि चक्षुदर्शनियों
में असयत सम्यग्दृष्टियों, से मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित
है, ॥२८७॥ अवधिदर्शनियों, का अत्यवहुत्व अधिज्ञानियों
के समान है ॥२८८॥ केवल, दर्शनियों, का अत्यवहुत्व केवल-
ज्ञानियों के समान है ॥२८९॥

इति दर्शनमार्गणा, से चक्षुदर्शनी, और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्या-
दृष्टि स लेकर क्षीणरूपाय, गुणस्थान तक अत्यवहुत्व सामान्य
यवन के समान है ॥२८६॥ विशेषता यह है कि चक्षुदर्शनियों
में असयत सम्यग्दृष्टियों, से मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित
है, ॥२८७॥ अवधिदर्शनियों, का अत्यवहुत्व अधिज्ञानियों
के समान है ॥२८८॥ केवल, दर्शनियों, का अत्यवहुत्व केवल-
ज्ञानियों के समान है ॥२८९॥

लेखामार्गणा स कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या
वालों में सामादन, मय, से, कम है ॥२९०॥ सामादनों, से
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सख्यात गुणित है ॥२९१॥ सम्यग्मिथ्या-
दृष्टियों से, असयतसम्यग्दृष्टि, असख्यात, गुणित है ॥२९२॥
असयतसम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त, गुणित, है ॥२९३॥
असयत गुणस्थान में सायिक सब से, कम है ॥२९४॥ सायिकों,
से उपशमक, असख्यात, गुणित, है ॥२९५॥ उपशमकों से
वेदक असख्यात, गुणित, है ॥२९६॥ नेत्रल, विशेषता, यह, है,
कि, कापोतलेश्यावालों, के असयत गुणस्थान में उपशमक, मय से,
कम है ॥२९७॥ उपशमकों, से सायिक, असख्यात, गुणित, है
॥२९८॥ सायिकों से वेदक, असख्यात, गुणित है ॥२९९॥
तेजोलेश्या, और पद्मलेश्या, वालों में अप्रमत्तसयत मय स कम
है ॥३००॥ अप्रमत्तसयतों, से प्रमत्तसयत मय, गुणित है
॥३०१॥ प्रमत्तसयतों से, मयतासयत, असख्यात, गुणित है

- ॥३०२॥ सयतामयतो से सासादन असंख्यात गुणित हैं
 ॥३०३॥ सासादनों से सम्यग्मिध्यादृष्टि सख्यात गुणित हैं
 ॥३०४॥ सम्यग्मिध्यादृष्टियों से असयतसंम्यग्दृष्टि असख्यात
 गुणित हैं ॥३०५॥ असयत सम्यग्दृष्टियों से मिध्यादृष्टि
 असख्यात गुणित हैं ॥३०६॥ असयत, संयतासयत, अमत्त-
 सयत और अमत्तसयत गुणस्थान में सम्यक्त्वसम्यग्धी अल्प-
 बहुत्व सामान्य कथन के समान हैं ॥३०७॥ श्रुतलक्षणां बलों
 में अपूर्णकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की
 अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३०८॥ उपशान्तकपाय पूर्वोक्त
 प्रमाण हैं ॥३०९॥ उपशान्तकपाय से क्षपक सख्यात गुणित
 हैं ॥३१०॥ क्षीणकपाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३११॥ सयोगि-
 केवली प्रवेश की अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३१२॥
 सयोगि केवली संवयकाल की अपेक्षा सगुणात् गुणित हैं
 ॥३१३॥ सयोगि केवली जिनों से असपक और अनुपशमक
 अमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥३१४॥ अमत्तसयतों से
 अमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥३१५॥ अमत्तसयतों से सयता-
 सयत असख्यात गुणित हैं ॥३१६॥ सयतासयतों से सासादन
 असख्यात गुणित हैं ॥३१७॥ सासादनों से सम्यग्मिध्यादृष्टि
 सख्यात गुणित हैं ॥३१८॥ सम्यग्मिध्यादृष्टियों से मिध्या-
 दृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥३१९॥ मिध्यादृष्टियों से असंयत
 सम्यग्दृष्टि जीव सख्यात गुणित हैं ॥३२०॥ असयत गुण-
 स्थान में उपशमक सब से कम हैं ॥३२१॥ उपशमकों से

सापिह असंख्यात गुणित हैं ॥३२०॥ सापिहों से वेदक
 उन्वात गुणित है ॥३२३॥ समतामयत, प्रमत्तमयत और
 प्रमत्तमयत गुणस्थान में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व
 सामान्य कथन के समान हैं ॥३२४॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण
 आदि तीन गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व है
 ॥३२५॥ उपशमक सबसे कम है ॥३२६॥ उपशमकों से शरक
 उन्वात गुणित है ॥३२७॥

इति क्षेत्रमार्गण

क्षेत्रमार्गण, म मर्ष्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिषेवली
 गुणस्थान तक, अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है
 ॥३२८॥ अमर्ष्यों में अल्पबहुत्व नहीं है ॥३२९॥ सम्यक्त्व-
 मार्गण म सामान्य सम्यक्दृष्टियों में अल्पबहुत्व अपिहानियों
 के समान है ॥३३०॥ सापिहों में अपूर्वकरण आदि तीन
 गुणस्थानों में उपशमक शरीर की अपेक्षा तुल्य और अल्प
 है ॥३३१॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३३२॥
 उपशान्तकषादियों से शरक संख्यात गुणित हैं ॥३३३॥ क्षीण-
 कषाक पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३३४॥ सयोगिषेवली और
 अपिहानियों प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही
 है ॥३३५॥ सयोगिषेवली जिन सचयकाम की अपेक्षा संख्यात
 गुणित हैं ॥३३६॥ अक्षपक और अनुपशमक अमत्तमयत
 उन्वात गुणित हैं ॥३३७॥ अमत्तमयतों से प्रमत्तमयत
 उन्वात गुणित हैं ॥३३८॥ प्रमत्तमयतों से प्रमत्तामयत संख्यात

गुणित है ॥३३६॥ मयतामयतो से अमयत सम्यग्दृष्टि
 अमर्यात गुणित है ॥३४०॥ अमयत, मयतामयत, प्रमत्त और
 अममत्ता गुणस्थान में स्थायित्व का अन्वय नही है ॥३४१॥
 वेदक में अप्रमत्तामयत मयसे कम है ॥३४२॥ अप्रमत्तामयतो
 से प्रमत्तामयत संग्यात गुणित है ॥३४३॥ प्रमत्तामयतो से
 सायतासायत अमर्यात गुणित है ॥३४४॥ सायतासायतो से
 असायत सम्यग्दृष्टि अमर्यात गुणित है ॥३४५॥ अमयत
 सायतासायत, प्रमत्ता और अप्रमत्ता गुणस्थान में वेदक का
 अन्वय नही है ॥३४६॥ उपशमक म अपूर्वरेण आदि
 तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प
 है ॥३४७॥ उपशान्तरूपाय प्रोक्त प्रमाण ही है ॥३४८॥
 उपशान्तरूपाय से अनुपशमन अप्रमत्तासायत से रूपात गुणित
 है ॥३४९॥ अप्रमत्ता सायतो से प्रमत्तामयत संग्यात गुणित
 है ॥३५०॥ प्रमत्तासायतो से मयतासायत अमर्यात गुणित
 है ॥३५१॥ सायतासायतो से असायत सम्यग्दृष्टि असायतो
 गुणित है ॥३५२॥ अमयत, सायतासायत, प्रमत्ता और अप्र-
 मत्ता गुणस्थान में उपशमक का अन्वय नही है ॥३५३॥
 सामादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि का अन्व-
 य नही है ॥३५४॥

इति मय्ययोगसंख्यस्य मोक्षो ॥ ३५५ ॥

संतीमार्गशा से संनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणरूपाय
 गुणस्थान नही अन्वय नही सामान्य स्वरूप के समान है

॥३५५॥ विगपता यह है कि सैनियों में असयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असरयात गुणित है ॥३५६॥ असैनी जीवों में अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५७॥ आहारमात्रणा से आहारकों में अपूर्वगुण आदि तीन गुणस्थानों में उपगमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥३५८॥ उपगमन्तरूपाय प्रोक्त प्रमाण ही है ॥३५९॥ उपगमन्तरूपाय से क्षपक सरयात गुणित है ॥३६०॥ क्षीणरूपाय प्रोक्त प्रमाण ही है ॥३६१॥ मर्यागिरिणी जिने प्रश की अपेक्षा प्रोक्त प्रमाण ही है ॥३६२॥ सयागिर्वेली जिने संबैकाल की अपेक्षा सरयात गुणित है ॥३६३॥ सयागिरेयली जिनों से अक्षपक और अनुगमक अप्रमत्तसयत सरयात गुणित है ॥३६४॥ अप्रमत्तसयतों से प्रमत्तसयत सरयात गुणित है ॥३६५॥ प्रमत्तसयतों से सयतासयत असरयात गुणित है ॥३६६॥ सयतासयतों से ममादन असरयात गुणित है ॥३६७॥ सामादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि सरयात गुणित है ॥३६८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों में असयत सम्यग्दृष्टि असरयात गुणित है ॥३६९॥ असयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित है ॥३७०॥ असयत सयतासयत, प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थान में सम्यक्त्व सम्यगी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३७१॥ वसी प्रसार अपूर्वगुण आदि तीन गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्यगी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३७२॥ उपगमक सबसे कम है ॥३७३॥ उपगमकों से

क्षपक संख्यात गुणित है ॥३७४॥ अनाहरकों में सयोगिफेरली
 जिन सबस कम है ॥३७५॥ सयोगिफेरलियों से अयोगिफेरली
 जिन संख्यात गुणित है ॥३७६॥ अयोगिफेरली जिनों से मासादन
 असंख्यात गुणित है ॥३७७॥ सासादनों से असयतसम्यग्दृष्टि
 असंख्यात गुणित है ॥३७८॥ असयतसम्यग्दृष्टियों से मिथ्या-
 दृष्टि अनन्त गुणित है ॥३७९॥ असयत गुणस्थान में उपशमक
 सब से कम है ॥३८०॥ उपशमकों से ज्ञापिक संख्यात गुणित
 है ॥३८१॥ ज्ञापिकों से वेदक असंख्यात गुणित है ॥३८२॥

इति सैनी और आहारमार्गः



